''इलाहाबाद नगर में अनौपचारिक क्षेत्र में रोजगाररत महिलाओं की समाजार्थिक दशाओं का अध्ययन''

"Allahabad Nagar Mein Anaupcharik Chetra Mein Rojgarrat Mahilaon Ki Samajarthic Dashaon Ka Adhyyan"

इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में डी०फिल्० उपाधि
के लिए प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध
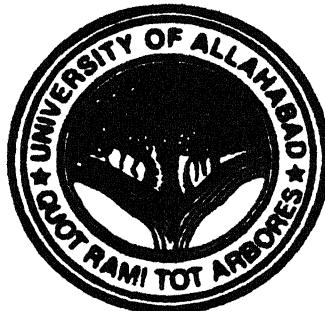
प्रस्तुतकर्ता

बन्दना त्रिपाठी

निर्देशक

डॉ० गिरीश चन्द्र त्रिपाठी

रीडर, अर्थशास्त्र

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

2003

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

श्रद्धेय स्व० श्री डॉ० बी०के० त्रिपाठी

रीडर अर्थशास्त्र विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय

इलाहाबाद

के

चरण कमलों में समर्पित

डॉ0 गिरीश चन्द्र त्रिपाठी

(रीडर)

अर्थशास्त्र विभाग,

इलाहाबाद विश्वविद्यालय,

इलाहाबाद

दिनाक

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि (श्रीमती) बन्दना त्रिपाठी अर्थशास्त्र विभाग में मेरे निर्देशन मे ''इलाहाबाद नगर में अनौपचारिक क्षेत्र में रोजगाररत महिलाओं की सामाजार्थिक दशाओं का अध्ययन'' विषय मौलिक शोध किया है यह शोध–प्रबन्ध पूर्ण मौलिक तथा नवीन है। डी0 फिल0 उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध को परिक्षार्थ को सस्तुत करता हूँ।
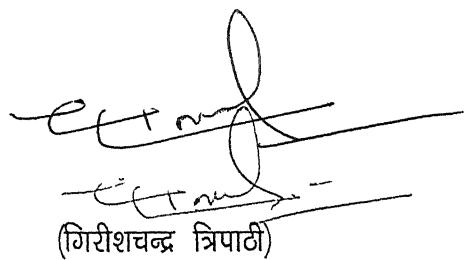
(गिरीशचन्द्र त्रिपाठी)

निर्देशक

दो शब्द

देश के समग्र विकास के लिए आवश्यक है कि राष्ट्र मे उपलब्ध समस्त उत्पादन के ससाधनो का विदोहन एव सवर्द्धन किया जाय। विशेषकर मानवीय ससाधनो का कुशल उपयोग विकास की पूर्वावश्यकता है। आर्थिक विकास मे पुरुषो के साथ-साथ महिलाओ का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सामाजिक परिवेश मे महिलाए गृहणी के रूप में गृह की देखभाल ही नहीं करती अपितु इस भौतिक परिवेश मे अपने आर्थिक स्तर को ऊँचा उठाने के लिए नियमित सरकारी और व्यक्तिगत सस्थानों की श्रमिक बन चुकी हैं। अनौपचारिक क्षेत्र मे रोजगाररत महिलाओ का देश के विकास में एक महत्वपूर्ण योगदान है। महिलाओ की एक वडी श्रमशक्ति अनौपचारिक क्षेत्र के विभिन्न उद्योगो में लगी हुई है। यह आवश्यक हो जाता है कि इस क्षेत्र में कार्य कर रही महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों का गहनता से अध्ययन किया जाय तथा इस क्षेत्र में रोजगाररत महिलाओ की दिन-प्रतिदिन बिगडती जा रही स्थिति को सुधारने हेतु एक सार्थक रणनीति बनायी जा सकती है।

इलाहाबाद नगर में अनौपचारिक क्षेत्र में रोजगाररत महिलाओं की सामाजार्थिक दशाओं को आठ अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय मे प्रस्तावना एव शोध का प्रारूप लिखा गया है। द्वितीय अध्याय में इलाहाबाद नगर की स्थिति और सामाजार्थिक अध्ययन का विवरण है। तृतीय अध्याय में चयनित रोजगाररत महिलाओ के सामाजिक दशाओं का वर्णन है। चतुर्थ अध्याय में महिलाओं के आर्थिक दशाओं एव कार्य-कलापों का वर्णन है। पचम अध्याय में चयनित रोजगाररत महिलाओं की समस्याओं का वर्णन किया गया है। छठ्वें अध्याय में सरकार द्वारा सचालित किये गये महिला कल्याणकारी योजनाएं कार्यक्रम का वर्णन है। सातवें अध्याय मे रोजगाररत महिलाओं के विकास के लिए उपयुक्त व्यूहनीति लिखी गई है। आठवें अध्याय में शोध का सारांश और निष्कर्ष है।

इस शोध प्रबन्ध को मै अपने पिता स्व0 श्री डॉ0 वी0के0 त्रिपाठी (रीडर, अर्थशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय) को समर्पित करती हूँ जिन्होनें मेरे चरित्र

निर्माण और भविष्य निर्माण में मुख्य भूमिका निभायी है तथा जिनके सस्कार जीवन पर्यन्त मेरा मार्ग दर्शन करते रहेंगे।

अपने इस शोध प्रबन्ध के लिए मै सर्वप्रथम अपने निर्देशक डॉ0 गिरीश चन्द्र त्रिपाठी रीडर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहूँगी जिन्होने अत्यन्त विषम परिस्थितियों में भी अपने सानिध्य और निर्देशन की क्रमबद्धता को निरतर बनाए रखा। आपके शिष्यवत को प्राप्त कर मुझे अध्ययन-अध्यापन से संबन्धित बहुत से नवीन अनुभव प्राप्त हुए जिन्हें शब्दों में व्यक्त करना सम्भव नही है।

मैं आभारी हूँ अपने विभागाध्यक्ष प्रो0 पी0एन0 मलहोत्रा (आचार्य) इलाहाबाद विश्वविद्यालय तथा विभाग के उन सभी गुरुजनों की जिन्होंने मुझे उत्साहित किया। डॉ0 बद्री विशाल त्रिपाठी (रीडर) इलाहाबाद डिग्री कालेज, जी ने भी हमेशा प्रोत्साहित किया। इस कार्य को सम्पादित करने में एस0एन0 शुक्ला (रिसर्च एसोसिएट्स) इलाहाबाद विश्वविद्यालय, के प्रति कृतज्ञ हूँ जिन्होंने पूर्णरूप से मेरी मदद की। श्री राधेश्याम मौर्य, श्री ओम प्रकाश मिश्रा एवं श्री आलोक पाण्डेय की भी मैं पूर्ण रूप से आभारी हूँ।

शोध कार्य को पूरा करने में मै अपनी माता श्रीमती आशा त्रिपाटी, सासू माँ श्रीमती मंगला देवी जी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किये बिना नही रह सकती जिनके आर्शीवाद और निरन्तर सहयोग के बिना यह कार्य पूर्ण होना असभव था।

मैं पूर्णरूप से अपने ज्येष्ठ श्री सचेन्द्र कुमार तिवारी की आभारी हूँ जिन्होंने मुझे इस कार्य को पूर्ण करने को प्रेरित ही नहीं किया बल्कि उन्होंने हर तरह प्रत्यक्ष एव अप्रत्यक्ष रूप से मेरी मदद की। और परिवार के सभी पूज्य बडे सदस्यो की आभारी हूँ जिन्होने इस कार्य में मेरा सहयोग किया।

शोध जैसे कार्य में पुस्तकालयों की अहम भूमिका होती है मैं इस सम्बन्ध में अनेक पुस्तकालयों, सस्थाओं तथा मत्रालयों की अत्यन्त आभारी हूँ इनमें प्रमुख रूप से गोविन्द बल्लभ पन्त सामाजिक शोध सस्थान, झूसी, इलाहाबाद, केन्द्रीय राज्य पुस्तकालय, इलाहाबाद गिरी संस्थान, लखनऊ समर्थन की मैं अत्यन्त आभारी हूँ।

मैं आभारी हूँ अपने पति श्री सन्दीप कुमार तिवारी की, जिन्होंने न केवल मेरे घरेलू कार्यों में मदद की, बल्कि सम्पूर्ण शोध कार्य को पूर्ण करने में मेरी मदद की। बिना उनके सहयोग के यह कार्य पूर्ण कर पाना मेरे लिए असम्भव था।

अन्त में मैं अवधेश कुमार मौर्य, सॉस साइबर कैफे, सलोरी को भी धन्यवाद देती हूँ कि उन्होंने इस शोध प्रबन्ध को जल्द से जल्द पूरा करने में मेरा पूरा सहयोग दिया।

Bandana Tripathi
बन्दना त्रिपाठी

दिनाक 17·6·2003

अनुक्रमणिका

सारणी अनुक्रमणिका

चित्र अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय

- ❖ प्रस्तावना एवं
- ❖ शोध का प्रारूप

प्रस्तावना

देश के समग्र विकास के लिए यह आवश्यक है कि राष्ट्र में उपलब्ध समस्त उत्पादन के ससाधनो का विदोहन एवं सवर्धन किया जाय। विशेषकर मानवीय ससाधनो का कुशल उपयोग विकास की पूर्वावश्यकता है। आर्थिक विकास मे पुरुषों के साथ-साथ महिलाओ का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सामाजिक परिवेश में महिलाये गृहणी के रूप में ही गृह की देखभाल ही नहीं करती, अपितु इस भौतिक परिवेश में अपने आर्थिक स्तर को ऊँचा उठाने के लिए नियमित सरकारी और व्यक्तिगत सस्थानो की श्रमिक बन चुकी है। महिलाएं परिवार की एक धुरी का कार्य करती हैं जिनके चारो ओर परिवार की अन्य गतिविधियाँ घूमती रहती हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित रही है। विकास के क्रम मे जनसंख्या का एक बड़ा भाग क्रियात्मक रूप में सामाजिक-आर्थिक प्रक्रिया से आज भी नहीं जुड सका है। अर्थव्यवस्था के असंगठित क्षेत्र में जनसंख्या का एक बडा भाग सलग्न है, और उसका वर्चस्व बना हुआ है। सगठित क्षेत्र के प्रभार के बाद भी असगठित क्षेत्र समस्याओ से ग्रस्त है। इसी क्रम में अनौपचारिक रूप में जुड़ी महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान होते हुए भी उनकी स्थिति का आकलन किया जाता है।

असगठित क्षेत्र वाक्याश का प्रयोग सामान्यत सगठित क्षेत्र के विपरीत अर्थो में किया जाता है। अनौपचारिक आय उद्गम स्रोतो को असंगठित क्षेत्र माना जाता है, लगभग समस्त उत्पादक क्रियाओं यथा- कृषि, निर्माण, विनिर्माण, खनन, परिवहन और सेवाओ का एक अश असगठित क्षेत्र में पाया जाता है। यद्यपि औपचारिक रूप से कृषि और गैर कृषि क्षेत्र की उन सभी इकाइयों को सगठित क्षेत्र की इकाइया माना जाता है जिसमें कार्य करने वालों की सख्या 10 या उससे अधिक हो और जिनमें नियुक्ति सीधे या किसी अभिकरण द्वारा की जाती है। इससे पृथक अन्य उत्पादक इकाइयों को असंगठित क्षेत्र में माना जाता है। ग्रामीण क्षेत्र का प्राथमिक व्यवसाय तो मूलत इसी प्रकृति का है। इस प्रकार व्यवसाय का विभाजन सगठित और असगठित व्यवसाय के रूप

में किया जाता है। तदनुसार उनमें कार्य करने वाले क्रमश संगठित और असगठित श्रमिक कहलाते हैं। 1

उत्पादन पद्धति, उत्पादन सरचना और सगठन की क्रियाशीलता को ध्यान मे रखते हुए यह कहा जा सकता है कि असंगठित क्षेत्र से आशय विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं की उन उत्पादक क्रियाओं वस्तुओं से है जो साधारणत निजी स्तर पर कम पूजी से छोटे पैमाने पर अनियत्रित उत्पादन संरचना के आधार पर की जाती है। उत्पादन में संलग्न परिवार ही व्यवसायगत प्रतिफल के स्वामी होते हैं। स्व-रोजगार की क्रियाशीलता के अतिरिक्त असंगठित क्षेत्र में आकस्मिक और मौसमी कार्य के अवसरों, जिसमें रोजगार और आय के अवसरों की निरतरता की वांछित स्तर तक सुरक्षा नहीं होती, की प्रधानता रहती है। कृषि, बागान, दस्तकारी, घरेलू-उद्योग, खनन और पारपरिक परिवहन आदि की क्रियाओं में आकस्मिक और मौसमी कार्य के अवसरों की प्रधानता रहती है इस प्रकार की क्रियाए असगठित क्षेत्र की प्रमुख अंग होती हैं। इनमें सलग्न श्रमशक्ति का बहुत बड़ा भाग असगठित श्रम के रूप में होता है।

असगठित क्षेत्र में उत्पादन अनुमाप स्तर अपेक्षाकृत छोटा होता है। उत्पादन उपक्रम को बढाने के लिए यहा उत्पादक को मुख्य रूप से आन्तरिक अतिरेक पर निर्भर रहना पड़ता है। इस क्षेत्र में उत्पादकों को उत्पादन प्रक्रिया मे निहित जोखिम से बचाने और उत्पादन में वृद्धि करने में सहयोग देने हेतु किसी भी प्रकार का सस्थागत अथवा राजकीय ढाचा विद्यमान नहीं है। परिणामत असगठित क्षेत्र में उत्पादन आकार का छोटा होना, आय का निम्न-स्तर और प्रति श्रम इकाई उत्पादन स्तर कम होना स्वाभाविक है।

असगठित क्षेत्र की उत्पादक तकनीक मुख्यत श्रम प्रधान और पारपरिक प्रकृति की होती है। घरेलू उद्योग, कृषि, बागान, दस्तकारी आदि जो असगठित क्षेत्र के प्रमुख सघटक हैं, में श्रम प्रधान तकनीक का ही वर्चस्व है इसके प्रतिकूल सगठित क्षेत्र मे उत्पादन अनुमाप बड़ा होता है और पूजी प्रधान प्रौद्योगिकी की प्रधानता होती है।

सगठित क्षेत्र के उद्यम बहुधा अल्पाधिकारीय प्रवृत्ति के होते हैं, फलत उनमे दुरभिसधि पूर्ण व्यवहार क्रियाशील होता है और कीमत निर्धारण के महत्वपूर्ण अश को

प्रभावित करता है। सगठित क्षेत्र में कीमत निर्धारण बाजार तक उत्पादन पहुंचने के पूर्व ही कर लिया जाता है। यहां कीमत की घोषणा और वस्तु की उपादेयता का प्रचार वस्तु को बाजार में पहुचने से पूर्व ही बिक्री व्ययों के माध्यम से कर दिया जाता है। इस पृथक असगठित क्षेत्र में कीमत निर्धारण में लेन-देन की प्रक्रिया में सम्मिलित व्यक्तियों के पारस्परिक सौदा करने की शक्ति बाजारी शक्तियों और स्थानीय संस्थाओं से प्रभावित होता है यहा उत्पादक और क्रेताओं का अति निकट का प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है और विपणन की दशाए भी स्थानीय और असगठित होती है।

असगठित क्षेत्र के उत्पादन कार्य में फर्मो व व्यक्तियों के प्रवेश मे बाधक शक्तियो की क्रियाशीलता अत्यन्त कम होती हैं। सगठित क्षेत्र में अपेक्षित व्यवसायगत निपुणता एव योग्यता, प्राथमिक निवेश, पैमाने की मितव्ययिताएं, व्यापार चिन्हो का पजीयन, विकसित प्रौद्योगिकी आदि नवीन फर्मो के व्यवसाय में प्रविष्ट होने में बाधा उत्पन्न करती हैं। असगठित क्षेत्र में प्रौद्योगिकीगत अवरोधों की क्रियाशीलता कम होती है, पूजीगत अपेक्षाए कम होती हैं। किसी विशिष्ट प्रशिक्षण की आवश्यकता कम होती है। उत्पादक सस्थाओं का राजकीय पजीयन अनिवार्यत अपेक्षित नहीं होता है। इस आधार पर स्वाभाविक रूप से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इस क्षेत्र मे प्रवेश की सुगमता होती है। सामान्यत असगठित क्षेत्र को गरीब व सीमान्त क्षेत्र माना जाता है। व्यवहारत यह देखने को मिलता है कि दस्तकारी, हस्तशिल्प एव अन्य सामान्य दैनिक उपयोग की वस्तुओ के उत्पादन और विपणन में कोई भी सम्मिलित हो सकता है स्वरोजगार हेतु व्यवसाय का चयन किया जा सकता है, परन्तु इससे प्राप्त प्रतिफल सामान्यत कम होता है।

असगठित क्षेत्र में स्वामित्व छोटे-छोटे व्यापक भौगोलिक क्षेत्र में बिखरे उद्यमियों के पास होता है इनमें से कुछ के पास तो अत्यन्त कम उत्पादक सम्पत्ति होती है। इनका उत्पादन स्वयं की आवश्यकताओं के लिए होता है। सगठित क्षेत्र को श्रम, कच्चे पदार्थ, माध्यमिक पदार्थ और आवश्यक सेवाओं की आपूर्ति असगठित क्षेत्र से की जाती है। इसके अतिरिक्त असंगठित क्षेत्र किसी अर्थव्यवस्था के सगठित क्षेत्र के उत्पादन की

खपत का प्रभावी आधार भी होता है। सगठित क्षेत्र में उद्यम का आकार और उत्पादन स्तर बड़ा होने के कारण सयत्र की स्थापना करने में विभिन्न वैधानिक कार्यवाहियॉ पूरी करनी पडती है, जबकि असगठित क्षेत्र मे इस प्रकार के अनेकों कार्य स्वाभाविक प्रक्रिया मे जारी रहते हैं, जिनके लिए किसी वैधानिक अनुमोदन की पूर्वापेक्षा नहीं पूरी करनी होती है।

भारत में असगठित क्षेत्र अत्यन्त प्रमुख है। यहॉ कार्यशील जनसख्या का एक बहुत बड़ा भाग असगठित क्षेत्र के व्यवसाय मे सलग्न है। समग्र राष्ट्रीय उत्पादन का तीन चौथाई भाग असंगठित उत्पादन उपक्रमों से मिलता है। असगठित क्षेत्र मे लगे श्रमिकों को असगठित श्रमिक कहा जाता है। भारतीय असगठित श्रमिकों को दो मुख्य भागों में बाटा जा सकता है स्व-रोजगार वाले कृषक, दस्तकार, छोटे-छोटे विक्रेता, सेवा कार्य करने वाले वर्ग आदि तथा मजदूरी पर कार्य करने वाले खेतिहर मजदूर, भूमिहीन मजदूर, छोटी दुकानों और होटलों पर कार्य करने वाले मजदूर इत्यादि। असगठित क्षेत्र की व्यापकता और उसके उद्‌गम का मूल स्रोत ग्रामीण क्षेत्र है। ग्रामीण क्षेत्र के श्रमिक बेहतर कार्य दशाओं की खोज में नगरों की ओर जाते हैं। स्व-रोजगार और मजदूरी पर कार्य करने वाले, फुटपाथ और धर्मशालाओं में रहकर कार्य करने वाले, दुकानों पर कार्य करने वाले, कूड़ा बीनने वाले आदि असंगठित श्रमिक हैं। औपचारिक भारतीय अर्थव्यवस्था के योजनाकाल मे सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के सगठित उद्योगों की महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। सगठित क्षेत्र के बड़े पैमाने के उद्योगों का तो इस स्तर तक विकास हुआ है कि उसके सामने पिछली एक शताब्दी का औद्योगिक विकास फीका पड़ जाता है।

वर्तमान शताब्दी के प्रथम अर्द्धांश में औद्योगिक उत्पादन में केवल 1 2 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से वृद्धि हो रही थी जबकि योजनाकाल में औद्योगिक उत्पादन की वार्षिक वृद्धि दर बढकर 6 1 प्रतिशत हो गयी। यद्यपि इस वृद्धि में सभी औद्योगिक समूहों ने अशदान किया परन्तु विशेष वृद्धि नवीन और जटिल उद्योगों के क्षेत्र में हुई। इसमें पेट्रोलियम उत्पादन, रसायन और रासायनिक उत्पाद, धातु उत्पाद, विद्युत उपकरण, परिवहन उपकरण, विद्युत उत्पादन आदि अत्यन्त महत्वपूर्ण रहे हैं। इनसे चालू उद्योगों में

नये उपक्रमों की स्थापना हुई। इससे औद्योगिक ढाचे का विस्तार हुआ है। स्वतत्रता प्राप्ति के बाद देश के औद्योगिक विकास की एक मुख्य बात यह रही है कि इस अवधि में सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों का तेजी से विकास हुआ। 1951 में देश में 29 करोड़ रुपये के विनियोग के केवल 5 ही विभागीय उपक्रम थे। 1994 तक इनकी सख्या 245 हो गयी जिनमें 164330 करोड रुपये की पूजी लगी थी। ये उपक्रम अब इस्पात, कोयला, अल्युमिनियम, ताबा, भारी और हल्के इंजीनियरिंग उत्पादन, रेल डिब्बे एव रेल इंजन, विमान और जहाज जैसी वस्तुए भी बनाने लगे हैं। यद्यपि 1991 में अपनायी गई नयी आर्थिक नीति में सार्वजनिक उद्यमों पर निजी सगठित उद्यमों को वरीयता दी गयी है तथापि योजनाकाल में भारत में सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के उद्योगों के प्रसार के बाद भी भारत में रोजगार और आय प्राप्ति का सर्वप्रमुख स्रोत असगठित क्षेत्र ही है।

दीर्घकाल से देश के समग्र उत्पादन में असगठित क्षेत्र का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वास्तव में भारतीय अर्थव्यवस्था की मौलिक प्रकृति मे ही असगठित क्षेत्र की विद्यमानता और क्रियाशीलता निहित रही है। भारतीय अर्थव्यवस्था प्रकृति में ही असंगठित क्षेत्र की विद्यमानता और क्रियाशीलता निहित रही है। भारतीय अर्थव्यवस्था में असगठित क्षेत्र की क्रियाशीलता सदियों से परीक्षित और सर्वथा अहिसक प्रकृति की रही है। इस क्षेत्र का प्रकृति के साथ पूर्ण समायोजन रहा है। यही कारण रहा है कि आदि काल से इस क्षेत्र की अपनी मौलिक क्रियाशीलता के बाद भी कोई परिस्थितिक सतुलन नहीं हुआ। वातावरण प्रदूषण का जहर पैदा ही नहीं हुआ। उत्पादन व्यवहार जन्य प्रदूषक तत्वों का प्रभाव प्रकृति की उपचारात्मक प्रक्रिया द्वारा स्वत निरस्त कर दिया जाता था। कृषि, ग्रामोद्योग और जरूरतों का अद्भुत समन्वय था। आवश्यकता के अनुरूप सभी वर्गो के लिए उत्पादन होता था। आधुनिक युग की एक मौलिक विशेषता केन्द्रित उत्पादन और व्यापार औद्योगीकरण की रही है। इसे विकास का प्रमुख निर्धारक तत्व मान लिया गया।

योजनाकाल में भारतीय अर्थव्यवस्था में भी महत्वपूर्ण सरचनात्मक परिवर्तन हुआ। अन्तर उद्योग व्यापार बढा। उद्योगों की सूची में अधुनातन विज्ञान और प्रोद्योगिकी पोषित

नवीन वस्तुओं के उद्योग जुड़े। फलत समग्र राष्ट्रीय उत्पाद की संरचना में परिवर्तन हुआ तथापि भारतीय अर्थव्यवस्था में आज भी असगठित क्षेत्र का ही वर्चस्व बना हुआ है। यह विभिन्न उद्योगो के लिए कच्चे पदार्थ की आपूर्ति का स्रोत एव निर्मित सामानों के लिए मॉग सृजित करता है। हाल के वर्षो में असगठित क्षेत्र के विस्तार से शुद्ध घरेलू उत्पाद में असगठित क्षेत्र का योगदान घटा है तथापि अब भी शुद्ध घरेलू उत्पाद का लगभग दो तिहाई भाग असगठित क्षेत्र से सृजित होता है। सारिणी सख्या 1 1 से यह प्रतीत होता है कि 1960-61 में असगठित क्षेत्र के उत्पादन का अश कुल शुद्ध घरेलू उत्पाद का 74 4 प्रतिशत था तथा 1998 में घटकर 61 0 प्रतिशत हो गया। इससे यह प्रतीत होता है कि कुल उत्पादन में असगठित क्षेत्र का योगदान घटा है तथापि अभी इसका योगदान तुलनात्मक रूप से सार्वाधिक है।

सारिणी सख्या 1 1

शुद्ध घरेलू उत्पाद मे असगठित क्षेत्र का योगदान

(प्रतिशत में)

वर्ष	सगठित क्षेत्र	असगठित क्षेत्र
1960-61	25 60	74 40
1970-71	27 72	72 28
1975-76	35 66	68 44
1993-94	36 90	63 10
1998-99	39 99	61 00

स्रोत इकोनामिक एण्ड पोलिटिकल वीकली, दिसम्बर 15, 1979 and National Accounni Statrsisco, 2001

देश की समग्र जनसख्या का बहुत बड़ा भाग असंगठित क्षेत्र से ही अपनी अजीविका कमाता है। अत असंगठित क्षेत्र का ही वर्चस्व बना हुआ है। भारतीय अर्थव्यवस्था में रोजगार से सम्बद्ध विश्वस्त आंकडे केवल सगठित क्षेत्र के लिए ही उपलब्ध है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि जो जनसंख्या असगठित क्षेत्र में लगी है उससे पृथक समस्त जनसंख्या असगठित क्षेत्र से अपनी अजीविका कमाती है।

शुद्ध घरेलू उत्पाद में संगठित और असंगठित क्षेत्र
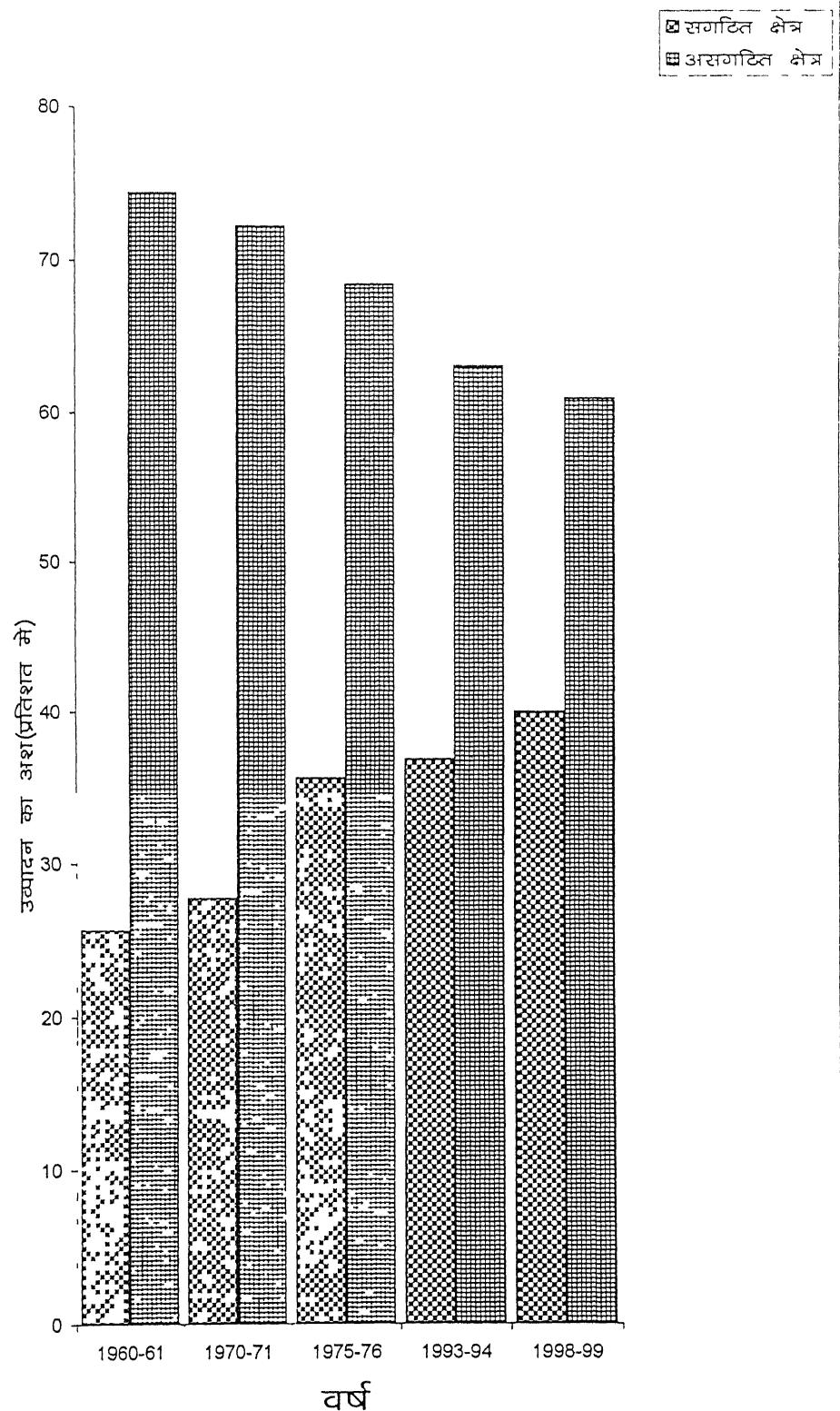
भारत का असगठित क्षेत्र जो देश के सकल घरेलू उत्पादन मे 61 प्रतिशत का योगदान करता है कि ओर निरपेक्ष रूप से पिछड़ा देश और दूसरी ओर असगठित श्रमिको की प्राप्तियों की दृष्टि से अतिपिछड़ा क्षेत्र है। असगठित श्रमिकों की वार्षिक प्राप्तिया न्यूनतम जीवन यापन के लिए भी पर्याप्त नहीं है। असगठित क्षेत्र में श्रमिकों के पास सामाजिक सुरक्षा में प्रावधान नाममात्र के हैं जैसे बुढापा, बीमारी, वृद्धावस्था, पेशन, मातृत्व लाभ आदि। परन्तु सामाजिक बीमा के अन्तर्गत चलाई जाने वाली सामाजिक सुरक्षा की योजनायें नगण्य हैं।[1]

महिलाओं की स्थिति :

महिलाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति का विवेचन एक गुत्थी की तरह है जिसे समझना अपने आप में भी जटिल प्रक्रिया है। महिलाओं की स्थित के सम्बन्ध मे पर्याप्त सामाग्री भी कम उपलब्ध है। मानव के अतीत का सच्चा अध्येता बनने के लिए मुख्यत प्रागैतिहासिक से प्राप्त जानकारी का सहारा लेना पड़ता है। ऐतिहासिक विवेचन के सहारे समाज में महिलाओं की स्थिति का अध्ययन सुलभ हो पाता है।

सामाजिक-आर्थिक दशाओं को स्पष्ट करने के लिए तीन युगों में विभक्त कर विवेचन किया गया है।

1-प्राचीनकाल या आदियुग 2-मध्यकाल, 3-आधुनिक काल

1. प्राचीन काल (आदियुग), पूर्व वैदिक काल से पूर्व मध्यकाल (1200 ई0 तक)

प्रारम्भिक काल में मनुष्य जगलों में रहता था। यह वह काल था जब मानवीय जीवन प्राकृति जीवन था। इस काल में मानव जगल में रहकर कन्दमूल का सेवन करके जीवन यापन करता था। भोजन के लिए वह जानवरों का शिकार भी किया करता था। समाज में अनियत्रित यौन सबन्ध के कारण मानव अर्द्ध मनुष्य भद्र पशु जैसा था। समाज में महिलाओं की स्थिति पुरुष के बराबर ही नहीं बल्कि श्रेष्ठ थी क्योंकि परिवार मात्र सत्तात्मक थी। बच्चे माता के नाम से जाने जाते रहे हैं। इस प्रकार आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक जीवन में महिलाओं को विशेष अधिकार प्राप्त था। बहुत समय

[1] त्रिपाठी बद्री विशाल (2000) असगठित क्षेत्र।

तक समूह में रहते थे। साथ उपजी सहयोग की भावना ने मानवीय सवेदना को जन्म दिया इसके कारण मानव समूह विशेष सस्कृति का निर्माण करने लगा। समूह मे रहने की इस प्रक्रिया ने ही भोजन सम्बन्धी आवश्यकताओं के लिए सघर्षो को जन्म दिया और इस सघर्ष मे मानव जीवन के महत्व तथा जीजिविषा को पहचानने की इच्छा को महत्व दिया। इन्हीं कारणों से पुरूष स्वाभाविक रूप से सक्रिय होता गया। क्रमश विकास की प्रक्रिया में खाद्य उत्पादन का आविष्कार पशुओं के उपभोग की जानकारी और स्थिर ग्राम्य जीवन का विकास हुआ।

इस नवीन जीवन पद्धति का महत्वपूर्ण परिणाम था जनसख्या वृद्धि। इस काल के नवपाषाण क्रान्ति की संज्ञा दी जाती है। ग्राम्य जीवन के स्थायित्व में मानव के व्यवस्था और नियम में सहयोग और सहसम्बन्ध की आवश्यकता महसूस की गयी। अब आपसी सहयोग से उत्पादित भोजन के कारण मनुष्य को अनिश्चित जीवन से छुटकारा मिल गया। फलस्वरूप अब उसके पास पर्याप्त अवसर उपलब्ध हुए। जनसख्या की वृद्धि के कारण मानव समूह द्वारा महिलाओं की सुरक्षा की विशेष व्यवस्था की गयी। धीरे-धीरे महिला इस सुरक्षा की आदी हो गयी और पुरूष में नियत्रण की भावना बढने लगी। यह वह समय था जब उत्पादन में विस्तार हुआ, काम बढा नारी श्रम शक्ति की आवश्यकता बढी सामाजिक प्रक्रिया जटिल होती गयी। समय के साथ-साथ लिग पर आधारित श्रम विभाजन ने सम्पूर्ण समाज को लगभग बाट दिया, बाहरी दुनिया में महिलाओं का सम्बन्ध न के बराबर रह गया।

नवीन सामाजिक परिस्थिति ने महिलाओं की सामाजिक स्थिति मे परिवर्तन ला दिया। एक ओर पूजीवादी श्रम प्रक्रिया प्रारम्भ हुई तो दूसरी ओर पितृ सत्तात्मक लिग आधार पदानुक्रम जिससे स्त्री घरेलू श्रमिक बनकर रह गयी अर्थात् महिलायें प्रजनन एव रखरखाव के लिये लघु उत्पादन में फसकर घरेलू बन गयी। प्रारम्भिक काल से लेकर सिन्धु सभ्यता का काल वैचारिक संक्रमण का काल माना गया जिसमें मातृ प्रभावात्मक व्यवस्था दिखती तो थी किन्तु पितृसत्तात्मक व्यवस्था परोक्ष रूप से प्रभावित होती थी।

वैदिक युग में भारतीय समाज में महिलाओं के योगदान का अवलोकन करने के लिए ऋग्वेद काल में यदि देखा जाय तो नारी को धन की देवी लक्ष्मी, ज्ञान की देवी सरस्वती एव शक्ति की देवी दुर्गा माना गया हैं। ऋग्वेद में सरस्वती को वाक् शक्ति कहा गया है जो उस समय नारी की ब्रह्मत्व कला वित्तता की परिचायक है। इससे यह सिद्ध होता है कि इस काल में महिलाए उच्च शिक्षा की अधिकारिणी थी।लक्ष्मी एव दुर्गा के रूप मे अर्द्धसत्ता की स्वामिनी थी। अर्द्धनारीश्वर की कल्पना उसके समान अधिभार के सत्य की पुष्टि करता है। ऋग्वेद में पुत्री के जन्म की निन्दा नहीं की गयी। महिलाए मुक्त वातावरण मे जीवन व्यतीत करने के लिए स्वतन्त्र थी। पुरुषों के साथ सामाजिक सम्बन्ध वाछनीय थे। महिलायें सामाजिक समारोह में सम्मिलित होती रहीं, समाज मे पर्दा प्रथा नहीं था। ऋग्वेद में महिलाओं की स्थिति में जो बातें कही जाती है वह बहुत सुखद प्रतीत होती है। ऋग्वैदिक आर्यो ने जिस समतामूलक समाजवादी समाज की कल्पना की थी उसमें समाज बहुत हद तक वर्ग विहीन था इस वर्गविहीन कहे जाने वाले समाज ने महिलाओं पर नियन्त्रण प्रारम्भ किया।[1] ऋग्वेद मे महिलाओं से सम्वन्धित विषय जैसे नारी शिक्षा, परिवार में उनकी स्थिति, विश्पला, मृदगलानी जैसी स्त्रियो का विवरण वस्तुत एक सुखद स्थिति थी। शिक्षा जैसे क्षेत्र स्त्रियों के लिए व्यापक रूप से खुले थे। वेद अध्ययन इस काल की प्रधानता थी। महिलाओं के वेद अध्ययन का अधिकार समान रूप से प्राप्त था।

पतिसेवा का जो एक तरफा और गलित रूप आज हमें समाज मे मिलता है उसके बीच ऋग्वेद में देखने को मिलता है। ऋग्वेद में महिलाओं की शिक्षा सुन्दरता तथा प्रेमपूर्ण व्यवहार की चर्चा बार-बार हुई है। ऋग्वेद काल में महिलाओं का विशिष्ट स्थान था। कालान्तर में इस स्थिति में अन्तर आया अथर्ववेद में नारी की सामाजिक स्थिति मे गिरावट आयी। नारी प्रज्ञाधिकार को भी धीरे-धीरे सीमित कर दिया गया है। वास्तव में परवर्ती साहित्य में शूद्र, कुत्ता, और काला पक्षी अशुभ माना गया और यज्ञ मे उन्हे देखना निषिद्ध माना गया। ऋग्वेद में महिला एव पुरुष युद्ध में समान भागीदार थे

[1] चक्रवर्ती उमा, कन्सपचुलाई जिग व्रहमनिकाय, पेट्रिमार्की इन अर्ली इण्डिया- जेन्डर कास्ट क्लाम एण्ड स्टेट इकोनामिक दि पाटिकल विकिाली 3 अप्रैल 1993।

किन्तु साहित्य में महिलाओ के युद्ध कौशल के लिए अनुपयुक्त माना गया। राजाओं के अन्त पुर मे दासियों के आधिक्य होने पर उन्हें पुरोहित और ऋषियो को दान में दिया जाने लगा। इस प्रकार वैदिक समाज मे महिलाओं का जो गौरवमय स्थान था कालान्तर में उसमें गिरावट आयी।

मनु साहित्य मे पुत्री की अपेक्षा पुत्र को अधिक महत्व दिया गया। पुत्री को दान पात्र माना गया। मनु ने स्त्रियों के परिवार स्थान पर ही रहकर परिवारिक शिक्षा का अध्ययन का प्रावधान रखा इन्होंने पति को पत्नी का स्वामी माना। इनके विचार में पत्नी को सदैव अपने पति, यहाँ तक कि दुराचारी पति की भी हमेशा देवता की तरह पूजा करनी चाहिए। महिलाओ को मन्त्र एव हवन से वचित किया गया। नारी को दासी के समान उपेक्षित माना गया। मनु ने महिलाओ के शारीरिक एव नैतिक दृष्टि से दुर्बल माना और इन्हे सभी अवस्थाओं में रक्षा एव सुरक्षा की आवश्यकता थी। इन्हें स्वतन्त्रता के योग्य नहीं समझा जाता था। मनु के विचार में महिला कभी भी वास्तविक स्वतन्त्रता का उपयोग नदी कर सकती। बचपन में वह पिता, यौनावस्था में पति पर एव वृद्धावस्था मे पुत्र पर आश्रित होना स्वाभाविक है।

उत्तर वैदिक काल में प्रारम्भ होते ही नारी की स्थिति मे बदलाव नजर आने लगा। नारी की मान मर्यादा व प्रतिष्ठा नहीं रह गयी। शिक्षक सस्थाओं या गुरूकुल मे जाकर शिक्षा ग्रहण करना नारी के लिये अतीत की कल्पना मात्र रह गयी वह घर पर ही अपने सगे सम्बन्धों से शिक्षा अर्जित करने लगी। इस प्रकार वह घरेलू होकर जीवन व्यतीत करने लगी। समाज में इनकी दशा दिन-प्रतिदिन गिरती गयी इनकी परिभाषा एव मान्यताए परिवर्तित होने लगी। नारी का चल या अचल सम्पत्ति पर अधिकार समाप्त हो गया। नारी को समाज में सामाजिक आर्थिक व धार्मिक सभी प्रकार के अधिकारो से वंचित कर दिया गया। बाल विवाह, विधवा विवाह, निषेध विधवाओं की अमगलसूचक, अभिशापित स्थिति, सती प्रथा, जौहर प्रथा, अशिक्षा, और अधविश्वासों में नारी को अन्याय झेलने के लिए बाध्य कर दिया गया। परिणामस्वरूप नारी की सहधर्मिणी, सहकर्मी सृजनात्मक भूमिका मलीन हो गयी। कुछ दिनों बाद महिलाओं की स्थिति में

सुखद परिवर्तन आया। नारी को शिक्षा विवाह निर्णय एव धर्म के क्षेत्र मे स्वतन्त्रता प्राप्त हुई जिससे भारतीय नारियो ने अपना कर्म क्षेत्र भारत के बाहर रखा।

इस काल में महिलाये धर्म एव दर्शन में रूचि रखती थीं। क्योंकि बौद्ध, जैन मठों में स्त्रिया कार्य करतीं थीं। ग्रन्थों में उल्लेख मिलता है कि सुरक्षा भिक्षुओं को बौद्ध धर्म के सिद्धान्त में महारथ हासिल थी। उसने राजगृह के भीड में भी ओजस्वी भाषण दिया था। चिकित्सा विज्ञान में भी महिलाओं को अच्छा ज्ञान प्राप्त था। क्योंकि अपाला में स्वय कुष्ठ रोग का इलाज किया था। राजपूत वशी महिलायें शिकार खेलने में रणक्षेत्र प्रक्रिया में सृजनात्मक रूप में भाग लेती थीं।

स्त्रियों ने व्यवसाय के रूप में कृषि का कार्य करती थी इसके अलावा युद्ध के अस्त्र-शस्त्र, टोकरी बनाना, सिलाई, कढाई इत्यादि कार्य करती थी। कुछ महिलायें शस्त्र रक्षक के रूप में पायी गयी हैं। पर्दा प्रथा का विशेष प्रचलन नहीं था क्योकि स्त्रियाॅ आजाद रूप में समाज में विचरण करती थीं स्त्रियों को बराबर धार्मिक स्थान मिलता था। कुछ स्त्रियाॅ धर्म एव ज्ञानार्जन हेतु विवाह नहीं करती थी। इस युग में महिलायें अपनी योग्यता का उपयोग करती थीं जिनके पति या पिता उदारवादी विचार के थे। स्त्रियाॅ कार्य श्रम मे अग्रणी थीं जिन्हें सयुक्त परिवार का सहयोग प्राप्त था।

2. मध्यकाल (पूर्व मध्यकाल से पूर्व आधुनिककाल 1200 ई0 से 1756 ई0) :

मध्यकाल में नारी की स्थिति काफी असन्तोषजनक थी। मध्यकाल में विशेषत मुगल साम्राज्य की स्थापना के बाद स्त्रियों के अवसर समाप्त हो गया जिससे कि उनके व्यक्तित्व का विकास हो सके। समाज में नारियों की दशा सुधारने हेतु कोई सामाजिक आन्दोलन नहीं चलाया गया। अपवाद रूप में ही सही किन्तु कतिपय योद्धाओ, भक्त, रणनीतियों के दृष्टान्तों से स्पष्ट होता है कि नारी को जब कभी अवसर मिले तो वह अपने निहित शक्ति, सामर्थ्य एव कौशल को प्रभावित कर सकती है। रजिया वेगम, मीरावाई, चाँद बीबी, ताराबाई, जीजाबाई ने अनुकरणीय दायित्वपूर्ति हेतु की जीवन्तता प्रदान की है। इस प्रकार के गौरव उनके उदाहरणों के बावजूद लगभग 300 वर्षो के इस काल में पर्दा, बहुपत्नी विवाह, वैधव्य जीवन, सतीप्रथा आदि सामाजिक कुरीतियाॅ भी

यथावत रही हैं। इसके निराकरण के लिए किसी भी सामाजिक आन्दोलन का न होना, आश्चर्यजनक था।

भारतीय इतिहास में मध्यकाल विदेशी आक्रमण बहुतायत हुए परिणामस्वरूप हमारा जीवन, हमारी प्रभुत्ता एव राजनीति का ह्रास हुआ। आदमियों के भयवश नारी असुरक्षा ने भारतीय महिलाओं को चहरदीवारी के अन्दर सीमित कर दिया जिससे इनका शैक्षणिक सस्थाओ मे प्रवेश में बाहरी वातावरण में हस्तक्षेप प्रभावित हुआ। पर्दा प्रथा का उदय हुआ साथ ही सती प्रथा व जौहर प्रथा ने भी समाज में स्थान बना लिया।

इस अवस्था में भी कभी धर्म कुछ महिलाए ज्वालामुखी के रूप में प्रफुल्लित हो गयी थी।ऐसी स्त्रियों में मीराबाई जैसे सत व वाल्मिकी, राजनीति में अकबर की रानी जोधाबाई बेगम एव अर्हता की रानी लक्ष्मीवाई का नाम प्रमुख है। मुस्लिम शासको के बीच यद्यपि स्त्रियाँ अपेक्षित थी फिर भी भारतभूमि में उद्यान की भाँति रजिया बेगम और चाँदबीबी जैसी सत्ता सम्भालने वाली रानियाँ और औरगजेब की पुत्री जेबुन्निशा जैसी कवियित्रियाँ उत्पन्न हुई। शाहजहाँ के समय मुमताज महल की प्रशासन मे दबाव डालना था। औरगजेब की बहन राजेन आरा ने भी राजनीति में सार्थक भूमिका निभाई। शासन सत्ता के प्रति हिन्दु महिलाओं की भूमिका विशेष रही मेवाण के राणा सागा की पत्नी कर्मावतर्ना ने युद्ध भूमि में वीरता का प्रदर्शन किया। रानी दुर्गावती के अपने पति दल्पत की मृत्यु के उपरान्त 1548ई0 में राज्य का कार्यभार सम्भाला और वीरता के कारण प्रसिद्धि भी प्राप्त की।

किन्तु शिक्षा इस राजनीति व प्रशासन में सहभागिता और उच्च वर्गो व महिलाओं तक सीमित रहा। मध्यमवर्ग में महिलाओं की स्थिति अधिक शोचनीय रही। उनका कार्यक्षेत्र घरेलू अचल तक सीमित रह गया और नौ-दस वर्ष की आयु मे विवाह अनिवार्य हो गया। सती प्रथा ने जोर पकड़ा। पति की मृत्यु के बाद जबरदस्ती उनकी पत्नी को जिन्दा जलाया जाने लगा। पर्दा प्रथा का प्रचलन मुस्लिम महिलाओं तक सीमित न रहकर हिन्दु महिलाओं में भी बढने लगा जिसमें उनका जीवन सकुचित हो गया। इस प्रकार इस काल में महिलाए अपनी स्थिति से नाखुश थीं। यह काल घरेलू काम-काज

की सेविका थी पति की मृत्यु के बाद उनके जीवन का कोई मूल्य न रह गया। फिर घर की मान मर्यादा की रक्षा हेतु उन्हें जबरदस्ती आग की लपटों मे धकेल दिया जाता था।

3. आधुनिक काल :

आधुनिक काल मे महिलाओं की स्थिति को दो भागों में विभाजित कर सकते हैं।
प्रथम - 19वीं शताब्दी के पूर्वाह्न का समय
द्वितीय - 19वीं शताब्दी के बाद की स्थिति का वर्णन है।

19वी शताब्दी के पूर्वाहन की स्थिति

19वीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में महिलाओ का स्तर निम्न कोटि का था। सती प्रथा, बाल विवाह, बहुपत्नीवाद जैसी प्रथाए प्रचलित थीं। विधवाओं को पुर्नविवाह पर सामाजिक प्रतिबन्ध था। समाज में महिला का स्थान मात्र उनके घर परिवार तक सीमित था। महिलाओं के शैक्षणिक व्यवसायिक, सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक अधिकार प्रदान करने के बजाए उन्हें घर परिवार की चहारदीवारी तक सीमित रखा गया। इन्हें अपनी रुचि प्रदर्शित करने मात्र दो साधन- पाक कला एव सिलाई-कढाई का कार्य करती थी। समाज में उच्च वर्ग की महिला तुलना में मलिन परिवार की महिलाए अधिक स्वतन्त्र थीं क्योंकि गरीब परिवार के लोगों की आर्थिक स्थिति निम्न होने के कारण महिलाओं से काम करवाने की स्वतन्त्रता देने को बाध्य थे। इसलिए गरीब परिवार की महिला रोजमर्रा का कार्य जैसे लकडी लाना, पानी लाना, सब्जी व फल बेचना, जैसे कार्य करती थी।

इस काल में महिलाओं का बहन और माँ के रूप में समाज में सम्मान था। लेकिन एक पत्नी के रूप में उसकी स्थिति दयनीय थी। इस काल में कुछ ऐसी नारियों ने जन्म लिया जो साहित्य, कला, दर्शन, प्रशासन और कौशल के क्षेत्र में अद्वितीय रही। रानी लक्ष्मीबाई जैसी बालाओं का जन्म इसी काल में हुआ जो समाज को एक नयी दिशा दी थी। मध्य एव उच्च वर्ग की स्त्रियाँ अपनी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता में अत्यधिक ग्रसित थी लेकिन इस समय का सामाजिक स्वरूप ऐसा था कि महिलाओं ने अपनी नियति समय को अपना ली थी।

19वीं शताब्दी के बाद की स्थिति :

भारतीय नारी के इतिहास में उन्नीसवीं शताब्दी के बाद का समय समाज सुधारवादी के रूप मे जाना जा सकता है। समाज में अराजकता धार्मिक तथा सामाजिक विचारको ने महिलाओ की दशा सुधारने हेतु प्रभावी आन्दोलन प्रारम्भ किया। राजा राममोहन राय ने सती प्रथा व बहुपत्नीवाद के विरुद्ध आवाज उठाई और महिलाओ की सम्पत्ति के अधिकार के पक्ष में बात कही।

समाज सुधारकों की श्रेणी में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, केशवचन्द्र सेन, बाल गगाधर तिलक, महादेव गोविन्द रानाडे आदि ऐसी महान विभूतियों ने महिला उत्थान के लिए सशक्त आन्दोलन प्रारम्भ किया। ईसाई मिशनरियों ने भी देश में शिक्षा प्रसार का जो रुख अपनाया उससे भी महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक स्थिति में सुधार हुए। देश में महिला शिक्षा प्रगति का मुख्य प्रयास ब्रह्म समाज, रामकृष्ण मिशन आदि सगठनों द्वारा किया गया।

सन् 1916 में प्रो0 मार्टे द्वारा चालू की गयी ''इण्डियन विमेन्स युनिवर्सिटी'' सस्था ने भी स्त्री शिक्षा में योगदान किया है। सन् 1917 में ''भारतीय महिला सगठन'' की स्थापना मद्रास शहर में एनी बेसेन्ट, डौरीली जिन राजदास तथा मार्गेट कौसिन्स ने मिलकर किया। इन लोगों ने समाज की कुरीतियों को दूर करने का बीडा उठाया। यह आन्दोलन पुरुषों के खिलाफ नहीं था अपितु इसका उद्देश्य महिलाओं की आत्मा को पुर्नजीवित करना था।

शिक्षा का प्रचार एव राजनीतिक सेवा के प्रादुर्भाव का समाज पर गहरा असर पडा। जिसका परिणाम यह हुआ कि इन सस्थाओं के माध्यम से शैक्षिक स्थिति में सुधार हुआ है जो कि निम्न तालिका से स्पष्ट होता है -

भारत में साक्षरता दर स्वतंत्रता के पूर्व
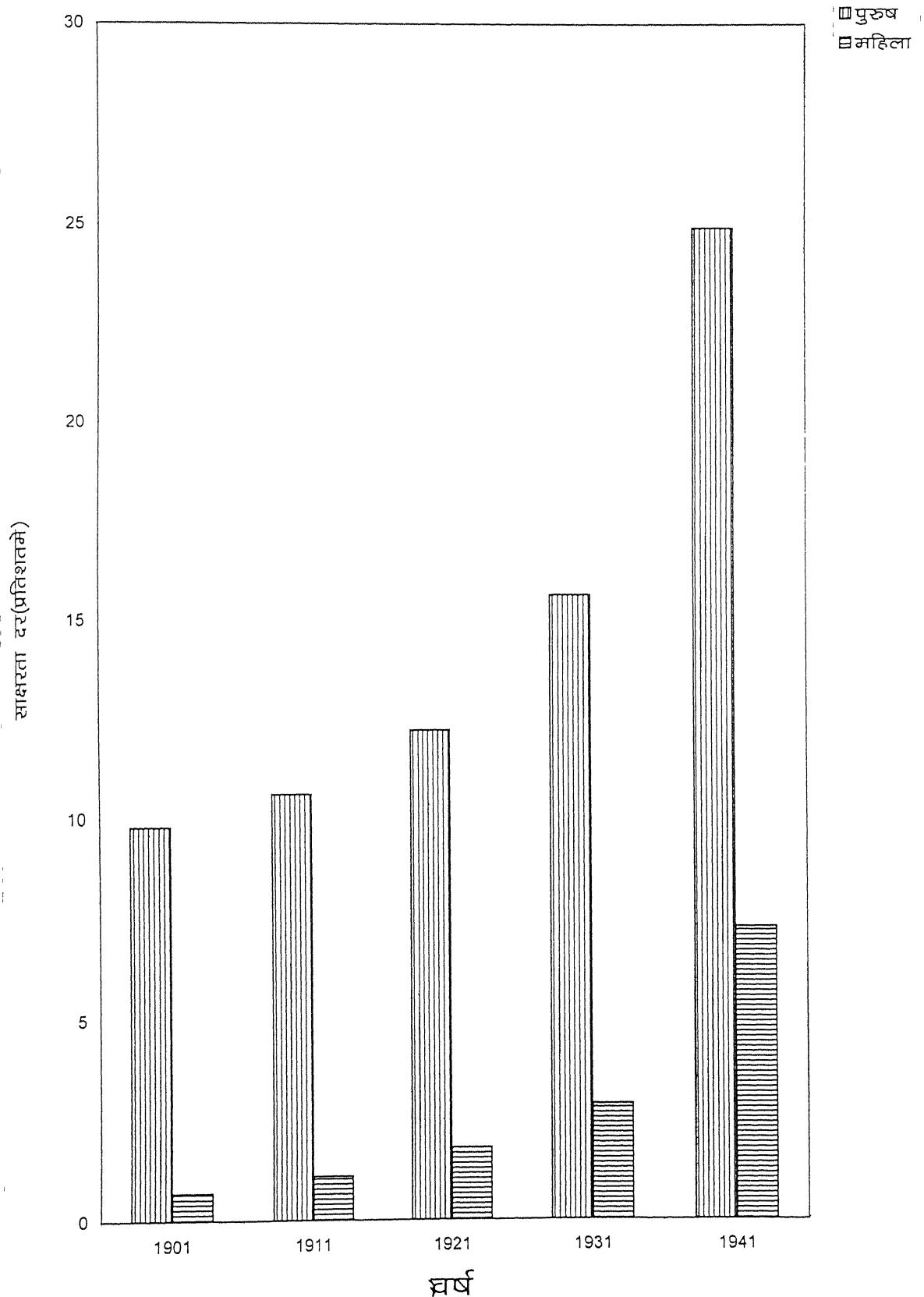
सारणी सख्या – 1 2

भारत मे साक्षरता दर (स्वतत्रता के पूर्व)

वर्ष	कुल	पुरुष	महिला
1901	5 3	9 8	0 7
1911	5 9	10 6	1 1
1921	7 2	12 2	1 8
1931	9 5	15 6	2 9
1941	16 1	24 9	7 3

स्रोत विभिन्न वर्षो के सेनसस रिपोर्ट।

सारणी से स्पष्ट है कि 1901 में कुल साक्षरता दर 5 3 प्रतिशत थी तो पुरुषों की साक्षरता दर 9 8 प्रतिशत थी लेकिन महिलाओं की साक्षरता दर बहुत कम थी जो कि 0 7 प्रतिशत थी। लेकिन सस्थाओं एव सगठ्नों द्वारा शिक्षा के प्रति जागरुक बनाने के लिए चलाये गये आन्दोलनों से साक्षरता दर में वृद्धि हुई। सन् 1911 में साक्षरता दर बढकर 5 9 प्रतिशत हुई तो पुरुषों की 10 6 प्रतिशत और महिलाओं की 1 1 प्रतिशत थी। 1921 में यह बढकर कुल 7 2 प्रतिशत हो गयी जिसमें पुरुषों की 12 2 प्रतिशत और महिलाओं की साक्षरता दर 1 8 प्रतिशत हुई।

सन् 1931 में साक्षरता दर बढकर 9 5 प्रतिशत हो गयी जिसमें 15 6 प्रतिशत पुरुष और 2 9 प्रतिशत महिला की थी। किन्तु ईस्वी सन् 1941 में कुल साक्षरता दर 16 1 प्रतिशत हो गई तो पुरुषों की साक्षरता दर 24 9 प्रतिशत और महिलाओं की 7 3 प्रतिशत महिलाओं की साक्षरता दर थी। सन् 1911 की तुलना में सन् 1941 में कुल साक्षरता की दर 36 65 प्रतिशत वृद्धि हुई जो कि यह वृद्धि पुरुषों की 42 57 प्रतिशत थी। महिलाओं में 15 07 प्रतिशत थी। इससे स्पष्ट होता है कि महिलाए शिक्षा के प्रति जागरुक हुई। परन्तु पुरुषों की अपेक्षा कम थी। लेकिन सस्थाओं एव संगठ्नों द्वारा किये गये आन्दोलनों से वृद्धि होती रही।

15 अगस्त 1947 को भारत अग्रेजों की दासता से मुक्त हुआ। 1947 में मिली स्वतन्त्रता देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण थी। बीते वर्षो में मिले आत्मविश्वास तथा नये सामाजिक मूल्यो के साथ हमे एक नवीन राष्ट्र का निर्माण करना था। यह स्वतन्त्रता हमे अनेक विसगतियो के साथ प्राप्त हुई थी। इस मुक्ति सघर्ष के साथ हमने सामाजिक-आर्थिक तथा राजनीतिक स्तर पर बहुत कुछ ग्रहण किया। स्वतत्रता के वास्तविक अर्थ को समझकर देश के भीतर चल रहे आन्तरिक आन्दोलन का नेतृत्व किया। इन आन्दोलनो में से कई आन्दोलन हमारी स्वतन्त्रता पर प्रश्न चिन्ह लगाते थे उनमे प्रमुख था दलित आन्दोलन एव नारी आन्दोलन। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भी ये प्रश्न यथावत बने रहे। सम्पूर्ण देश में दलितों एव महिलाओं की स्थिति विचारणीय थी। स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय भारतीय समाज की मान्यतायें पूर्णरूप से सामतवादी थी। सामती व्यवस्था एक पिरामिड है जो ऊपर से नीचे की ओर फैलती है।

1947 से 1957 का दशक में भारतीय महिलाओ की सामाजिक स्थिति को बहुत अच्छा नहीं कहा जा सकता। 1948 में प्रकाशित कल्याण का नारी अक महिलाओं के प्रति समाज में पनप रही वर्ण विचारवाद तथा सती सावित्री की नारी भूमिका का मिला-जुला उपदेश प्रस्तुत करता है। एक लेख में स्त्री के बाल प्रथा और ब्रह्मावस्था में जो स्वतन्त्रता न रहने के लिए कहा गया वह इस दृष्टि से कि उसके शरीर का नैसर्गिक सघटन ही ऐसा है कि उसे सदा एक सहज पहरेदार की आवश्यकता है।[1]

1957 से 1967 के दशक में व्यापक स्तर पर होने वाले शिक्षा के विकास में महिला रोजगार को प्रोत्साहित किया। महिला में शैक्षिक विकास ने ही पर्दा प्रथा की परम्परा को तोडकर महिलाओं के बाहर आने के लिए प्रेरित तथा उत्साहित किया। इस अवधि मे आदर्श परिवार, अल्पसख्यक हो गयी। सयुक्त परिवार टूटने लगे, बडी सख्या मे महिलाओं ने वैतनिक श्रम प्रारम्भ कर दिये। स्वास्थ्य सेवायें, शिक्षा आदि क्षेत्र में महिलाओं के लिए विशेष रूप से आकर्षण का केन्द्र बने। जहाँ शिक्षिकाओं की सख्या में वृद्धि हुई वहीं नर्सिंग में स्त्रियों ने धीरे-धीरे अपना एकाधिकार बनाया। इस काल में

---

[1] कल्याण नारी अक – भारतीय नारी का स्वरूप और दायित्व पृष्ठ 72, गीता प्रेस 1948

महिलाओं का बहुत बड़ा कार्यरत प्रतिशत असगठित क्षेत्र से जुडा रहा साथ ही इसकी विशेषता मे यह देखा गया कि महिलाओं के कार्य के उचित प्रतिफल का अभाव था। फिर भी महिलाये पुरातन के मान्यताओं के बीच समाज में अपना स्थान बनाने के लिए सघर्षरत रहीं।

रोजगार के क्षेत्र में महिलाओ के प्रवेश की महत्वाकाक्षा उसके परिवारिक जीवन को प्रभावित करने लगी। इसमें परिवार में कलह एव विद्रोह की स्थिति उत्पन्न हुई। समाज मे उच्च वर्ग में परिवार में शिक्षा पढने एवं इस पेशे से जुडने में स्वतन्त्रता मिली वही निम्न आर्थिक तगी से जुडे परिवार की महिलाए नर्सिग एव शैक्षिक कार्य से जुडने का प्रयास किया।

1970 के दशक के आरम्भिक वर्षो में महिलाओं के प्रति होने वाले भेदभाव को मिटाने तथा समाज में उनकी समान भागीदारी सुनिश्चित करने के प्रयासों में आयी। इन प्रयासों में सक्रियता आई। इन प्रयासों के इस चेतना से भी प्रेरणा मिली कि राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सास्कृतिक, कानूनी, शैक्षिक और धार्मिक दशाओ से महिलाओ की प्रमुख व्यापक और उत्पादक भूमिका का घनिष्ठ सम्बन्ध है जो महिलाओं के उत्थान मे बाधा है।[1] 1967-77 तक का समय महिला के सन्दर्भ में कई दृष्टियों से उल्लेखनीय रहा है। शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य जनचेतना, सामाजिक परिवर्तन विशेष रूप से मुखरित महिला आन्दोलन की दृष्टि से सक्रमण काल रहा है। नारी आन्दोलन ने देश की राजनीतिक स्थितियों में महिला अधिकारों तथा उनकी समाज के प्रति महत्वपूर्ण भागीदारी को समझाने के सकारात्मक प्रयास किए। जिस देश में महिलाओं की परम्परागत भूमिका तथा उनके शोषण पर समाज को सोचने के लिए विवश कर दिया। वर्ष 1972 में सयुक्त राष्ट्र महासभा ने अपने प्रस्ताव 3010(27) में 1974 को अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष घोषित किया और कहा कि पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता को वढावा देने विकास के सभी प्रयासों में महिलाओं की पूरी भागीदारी सुनिश्चित करने और विश्व शान्ति के मजबूत बनाने में स्त्रियों की भागेदारी को बनाने के लिए तेज प्रयास किये जायेंगे।

---

[1] नैरोबी अर्न्तगामी नीतिन प्रेस

(1) महासभा ने उनके प्रभाव 3520 (30) में इस विश्व कार्यवाई योजना को स्वीकार किया जो 1975 में मैक्सिको सिटी में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय वर्ष विश्व सम्मेलन में वर्ष के उद्देश्यों को लागू करने के लिए पारित किये गये थे।

(2) इसी प्रस्ताव में महासभा में 1976-85 के अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष (समानता विकास और ख्याति) घोषित किया।[1]

स्वतन्त्रता प्राप्ति के चौथा दशक महिलाओं के पहले की तुलना मे अधिक सवेदनशील स्थितियों में लाकर खडा कर दिया। परिवार तथा समाज के अन्दर होने वाले भेद-भाव तथा शिक्षा और विकास भी बेहतर स्थितियों के लिये महिलाओं ने कब परम्परागत रुढियो को तोड़कर चलना प्रारम्भ किया। दहेज हत्या, बलत्कार, सामाजिक पारिवारिक उत्पीडन के खिलाफ महिला आन्दोलन ने अपने सैद्धान्तिक विचार धाराओ के अनुरूप सभी धार्मिक तथा परम्परावादी विचारधाराओं के विरुद्ध अपने विरोध प्रदर्शित किए।

महिलाओ की समाज में महत्वपूर्ण भूमिका होते हुए भी दुर्भाग्य रहा है कि हमारे देश मे महिलाओं की स्थिति दुनिया के अन्य विकसित देशों की तुलना में अत्यन्त पिछडी हुई हैं। देश की आजादी के बाद यद्यपि महिलाओं की स्थिति में विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमो के परिणामस्वरूप महिलाओं की स्थिति मे सुधार हुआ है। महिलाओं के विकास हेतु यह आवश्यक है कि उन्हे आगे बढने के समान अवसर प्रदान किये जाय। हमारे देश के अनुभवों से स्पष्ट होता है कि महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कम अवसर मिले हैं। यदि शिक्षा के विकास के साथ-साथ सूचकाक में देखा जाय तो इसमें मिलता है जिसे हमने सारिणी सख्या 1 3 से दर्शाया है।

---

[1] अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के विश्व सम्मेलन 'द रिपोर्ट मेक्सिको सिटी' 10 गज 2 जुलाई 1925 (सयुक्त राष्ट्र प्रकाशन सेल्स न0ई0-76)

भारत की साक्षरता दर स्वतत्रता के बाद
पुरुष
महिला
साक्षरता दर (प्रतिशत में)
80
70
60
50
40
30
20
10
0
1951
1961
1971
1981
1991
2001
व्रर्ष
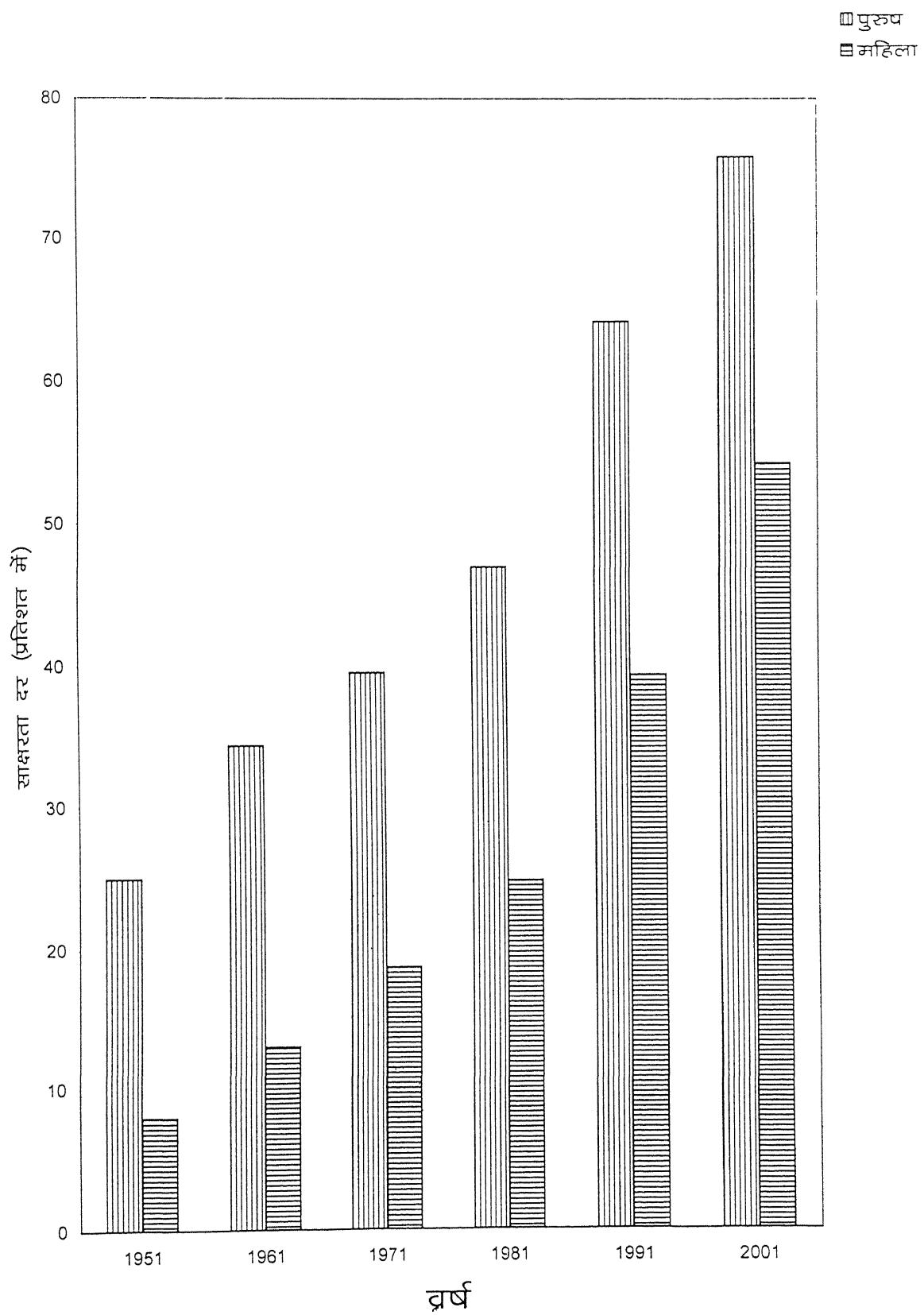
सारणी सख्या – 13

भारत की साक्षरता दर (स्वतत्रता के बाद)

(प्रतिशत)

सन्	कुल व्यक्ति	पुरुष	महिला
1951	16 7	25 0	7 9
1961	24 0	34 4	13 0
1971	29 5	39 5	18 7
1981	36 2	46 9	24 8
1991	52 21	64 13	39 29
2001	65 37	75 85	54 16

स्रोत Census of India वर्ष 1961, 1991, 2001।

सारणी सख्या 1 3 से प्रतीत होता है कि सन् 1951 में साक्षरता दर 16 7 प्रतिशत थी तो पुरुष की 25 00 प्रतिशत और महिलाओं की 7 9 प्रतिशत थी। यह सन् 1961 में 24 00 प्रतिशत कुल साक्षरता दर थी तो पुरुष की 34 4 प्रतिशत, महिलाओ की 13 00 प्रतिशत। सन् 1971 में यह 29 5 प्रतिशत हो गयी तो पुरुषों की 39 5 प्रतिशत और महिलाओं की 18 7 प्रतिशत थी। सन् 1981 में यह बढकर 36 2 प्रतिशत कुल थी तो पुरुषों की 46 9 और महिलाओं की 24 8 प्रतिशत हो गयी। सन् 1991 में भारत की साक्षरता दर 52 21 प्रतिशत थी तो महिला की साक्षरता का प्रतिशत 39 29 प्रतिशत थी। तो पुरुषों की साक्षरता दर 64 13 प्रतिशत थी। 2001 में साक्षरता दर बढकर कुल साक्षरता दर 65 37 प्रतिशत हो गई और इसमें महिलाओ की साक्षरता का प्रतिशत 54 16 प्रतिशत थी तो पुरुषों की 75 85 प्रतिशत हो गई।

महिला का शिक्षा के क्षेत्र में पिछडापन न केवल उनकी सामाजिक स्थिति को खराब करता है वरन् उन्हें आर्थिक रूप से निर्धन बनाता है। काम न करने वाली महिलाए परिवार के पुरुषों के आय पर निर्भर रहती हैं तो दूसरी ओर काम करने वाली महिलाए अशिक्षित या प्रशिक्षित न होने के कारण उन्हें उचित पारिश्रमिक नहीं दिया जाता

है। अनौपचारिक क्षेत्र में रोजगार प्राप्त करने वाली महिलायें तो हमेशा इस प्रकार की घटनाओ की शिकार होती हैं। रोजगार के कम अवसर, उच्च शिक्षा की अनिवार्यता तथा चयन मे भेद-भाव पूर्ण तरीके महिलाओं को अनौपचारिक क्षेत्र में कार्य करने को बाध्य करते हैं।

महिलाओ की समाज में महत्वपूर्ण भूमिका होते हुए भी आर्थिक स्थिति सुदृढ नही है। देश की आजादी के बाद यद्यपि महिलाओं की स्थिति में विभिन्न योजनाओ और कार्यक्रमों के परिणामस्वरूप कुछ सुधार हुआ है। इसका लाभ प्राय शहरी क्षेत्रो तक ही सीमित रहा है तथा ग्रामीण क्षेत्रों में इनका योगदान लगभग नगण्य ही रहा है। महिलाओ के विकास हेतु यह आवश्यक है कि उन्हें आगे बढने के समान अवसर प्रदान किये जाये किन्तु अनुभवों से स्पष्ट होता है कि महिलाओं को पुरुषों की तुलना मे आगे बढने के अवसर कम मिलते हैं।

अनौपचारिक क्षेत्र के मजदूरों के क्रिया-कलापों पर दृष्टि डाले तो हम पाते हैं कि इस क्षेत्र में विविध प्रकार के कार्य होते हैं। एक ओर स्वरोजगार के छोटे-छोटे विक्रेता, सेवाकार्य, दस्तकार, मजदूर और घरों मे काम कर रही महिलाए हैं तो दूसरी ओर महिलाए अनेक छोटी-छोटी बिखरी हुई प्रदूषित औद्योगिक इकाईयों में तरह-तरह के खतरनाक रसायनों में कार्य कर रही हैं। इन मजदूरों पर न तो कोई श्रम कानून लागू होता है और न ही उन्हें किसी प्रकार की सामाजिक सुरक्षा प्राप्त होती है। भवन निर्माण या खानों में कार्य कर रही महिलाओं को तो प्राय दैहिक शोषण का भी शिकार होना पड़ता है। महिला मजदूरों को पुरुष के समान कार्य करने के बाद भी उनसे कम मजदूरी दी जाती है जिससे इनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति दयनीय होती है।

अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं की सामाजार्थिक विकास की आवश्यकता है। महिलाओं की श्रम में भागीदारी बढायी जाय ताकि उपलब्ध मानव ससाधनों का समुचित उपयोग हो सके। इसके साथ यह भी आवश्यक है कि जिन महिलाओं को अनौपचारिक क्षेत्र में रोजगार मिल रहा है। उनकी सामाजिक, आर्थिक

स्थिति को सुधारने हेतु उचित कदम तत्कालीन प्रभाव से उठाये जायँ। पढी-लिखी, दक्ष, कुशल तथा प्रशिक्षित महिलाओं के साथ ही साथ निरक्षर व गरीब महिलाओं की बडे पैमाने पर आर्थिक विकास की मुख्य धारा मे शामिल किया जाय।

अध्ययन की आवश्यकता/महत्व :

अनौपचारिक क्षेत्र मे रोजगाररत महिलाओ का देश के विकास मे महत्वपूर्ण योगदान है, महिलाओं की एक बडी श्रम शक्ति अनौपचारिक क्षेत्र के विभिन्न उद्योगों मे लगी हुयी है, यह आवश्यक हो जाता है कि इस क्षेत्र मे कार्य कर रही महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियो का गहनता से अध्ययन किया जाय तथा इस क्षेत्र मे रोजगाररत महिलाओं की दिन प्रतिदिन बिगडती जा रही स्थिति को सुधारने हेतु एक सार्थक रणनीति बनायी जा सकती है।

उत्तर प्रदेश के महत्वपूर्ण जिलों में इलाहाबाद का नाम एक विशिष्ट स्थान रखता है। ऐतिहासिक नगरी के परिप्रेक्ष्य में प्रसिद्ध यह जिला शैक्षिक व आर्थिक गतिविधियों के रूप में भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह कटु सत्य है कि महिलाओ की स्थिति के सन्दर्भ में यह अभी भी पिछड़ा हुआ है। इलाहाबाद जिले की कुल जनसख्या सन् 1991 की जनगणना के अनुसार 4,21,313 थी जिसमें 26,24,302 पुरुष तथा 22,96,484 महिलायें हैं। इलाहाबाद साक्षरता दर 42 66 प्रतिशत है जिनमें 59 14 प्रतिशत पुरुष तथा 23 45 प्रतिशत महिलाए साक्षर थीं। इसकी तुलना में इलाहाबाद शहर की जनसख्या 8,44,546 थी जिसमे 4,71,509 पुरुष तथा 3,73,037 महिलाए थीं। शहरी निवासियों की साक्षरता दर 67 8 प्रतिशत है जिसमें 78 6 प्रतिशत पुरुष तथा 62 4 प्रतिशत महिलाए साक्षर हैं।

विगत वर्षो में इलाहाबाद में हुए विकास के परिणामस्वरूप रोजगार के कुछ अवसर वढे हैं, यद्यपि इनकी सख्या अनौपचारिक क्षेत्र में ही अधिक रही है। महिलाओं की कम मूल्य पर उपलब्धता तथा उनसे अधिक कार्य करवाने में आसानी को ध्यान मे रखते हुए नियोक्ताओं में महिलाओं के लिए कुछ अधिक अवसर भी प्रदान किये। किन्तु इसका परिणाम यह हो रहा है कि अनौपचारिक क्षेत्र में महिलाओं

का शोषण अनवरत बढता जा रहा है तथा उनकी सामाजिक, आर्थिक स्थिति में भी विशेष गुणात्मक सुधार नजर नहीं आ रही है।

उपरोक्त तथ्यो को ध्यान में रखकर कहा जा सकता है कि अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को जानने व उसमें गुणात्मक सुधार लाने में प्रस्तावित शोध एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी और अनौपचारिक क्षेत्र मे कार्य कर रही महिलाओं की स्थिति सुधारने हेतु एक सार्थक रणनीति प्रस्तुत करेगी।

अध्ययन का उद्देश्य :

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य इलाहाबाद नगर में अनौपचारिक क्षेत्र मे रोजगाररत महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक दशाओं का अध्ययन करना है। अनौपचारिक क्षेत्र के विभिन्न व्यवसाय में रोजगाररत महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक दशाओं का अध्ययन करने के लिये प्रस्तुत शोध कार्य में प्रमुख उद्देश्य निम्नवत है-

1 अनौपचारिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी का अध्ययन एव विश्लेषण करना।

2 अनौपचारिक क्षेत्र मे कार्यरत महिलाओं की मजदूरी एव जीवन स्तर का अध्ययन करना।

3 अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत महिला श्रमिकों की सामाजिक-आर्थिक दशाओं का अध्ययन करना।

4 अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत महिला श्रमिकों के उत्थान हेतु किये गये सरकारी और गैर-सरकारी प्रयत्नों का मूल्याकन करना।

5 अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं के विकास हेतु उपयोगी व्यूह नीति का सुझाव देना।

अध्ययन हेतु परिकल्पनाएं :

प्रस्तावित शोधकार्य के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए अध्ययन हेतु कुछ परिकल्पनाए बनाकर उनका परीक्षण किया गया है। परीक्षण हेतु परिकल्पनाएं निम्नवत हैं-

1 इलाहाबाद नगर में कार्य करने वाली अधिकाश महिलाए दलित व पिछडे वर्ग की हैं।

2 इलाहाबाद नगर में कार्य करने वाली महिलाओं की आर्थिक स्थिति ग्रामीण एव शहरी दोनों ही क्षेत्रों में समान होती है।

3 इलाहाबाद नगर में कार्य करने वाली महिलाओं का कार्य मात्र अल्प अवधि का ही होता है।

4 इलाहाबाद नगर में कार्य करने वाली महिलाओं में साक्षरता दर बहुत कम होती है।

5 इलाहाबाद नगर क्षेत्र में कार्य करने वाली महिलाए अपनी खराब स्थिति के कारण खराब कार्य परिस्थितियों के होते हुए भी वहॉ कार्य करने के लिये विवश होती हैं।

अध्ययन का क्षेत्र :

इलाहाबाद जनपद मे इलाहाबाद नगर को अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत महिलाओ की सामाजिक-आर्थिक दशाओ का अध्ययन क्षेत्र है। इलाहाबाद नगर मे नगर महापालिका, कैण्ट और टाऊन एरिया का क्षेत्र सम्मिलित है लेकिन इलाहाबाद नगर में सर्वेक्षण हेतु अनौपचारिक क्षेत्र मे कार्यरत महिलाओं का साक्षात्कार हेतु नगर से नगर महापालिका क्षेत्र का चयन किया गया। नगर निगम के 70 वार्डो में से 16 वार्डो, को सम्मिलित किया गया तथा जिसे निम्नलिखित तालिका सख्या 1 4 में दर्शाया गया है-

सारिणी सख्या 1 4

इलाहाबाद नगर के चयनित वार्ड एव महिलाए

क्र0स0	वार्ड सख्या	वार्ड/मुहल्ले का नाम	चयनित महिलाये (सख्या)
1	22	फाफामऊ	30
2	34	तेलियरगज	30
3	3	गोविन्दपुर	20
4	28	सलोरी	30
5	9	ममफोर्डगज	20
6	27	म्योराबाद	20
7	18	राजापुर	25
8	61	कटरा	30
9	21	एलनगज	15
10	62	भरद्वाजपुरम्	30
11	14	बाघम्बरी गद्दी	30
12	43	दारागज	30
13	47	अलोपीबाग	30
14	29	मधवापुर	20
15	51	वहादुरगज	20
16	66	अटाला	20
योग			400

स्रोत कार्यालय, नगर निगम, इलाहाबाद

अध्ययन की विधि :

प्रस्तुत शोध में तथ्य सकलन हेतु प्राथमिक एव द्वितीयक श्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक ऑकडों जिन्हें अनुसधानकर्ता द्वारा पहली बार अर्थात नये रूप में

अपने प्रयोग के हितार्थ एकत्रित किया है। शोधकर्ती ने निदर्शन विधि मे दैव निदर्शन रीति का प्रयोग किया है। शोधकर्ती ने अनुसूची को साक्षात्कार तथा प्रत्यक्ष निरीक्षण से किया है।

द्वितीय समक श्रेणी मे वो सूचनाये हैं जिन्हे शोधकर्ती ने अपने प्रत्यक्ष अवलोकन द्वारा न प्राप्त करके दूसरे अन्य प्रकाशित समकों से प्राप्त किया है। इस श्रेणी की सूचनाये सरकारी, गैर-सरकारी अभिलेख, साख्यिकी पत्रिका, पुस्तक, समाचार पत्र, पत्रिकाये, आयोगो एव समिति के प्रतिवेदन एव विभिन्न प्रकार के प्रकाशित समकों को एकत्र कर प्रयोग किया है।

इलाहाबाद नगर के असगठित क्षेत्र में सन् 1998 में कुल 6946 महिलाये कार्यरत थीं। कार्यरत महिलाओं का 7 00 प्रतिशत अर्थात् 400 महिलाओ को अध्ययन हेतु चयनित किया। प्रथम अनुसूची हेतु शोधकर्ती ने इलाहाबाद नगर के असगठित क्षेत्र में कार्य कर रही महिलाओं की इलाहाबाद नगर महापालिका के चयनित मोहल्लों में से 800 कार्यरत महिलाओं की सूची तैयार की गई। इस सूची में से दैव निदर्शन विधि के आधार पर 400 महिलाओं का चयन उनके कार्य और व्यवसाय समूह के आधार पर व्यक्तिगत रूप से मिलकर अनुसूची की सूचनायें एकत्र की। जिसे सारणी सख्या 1 5 में दर्शायी गयी है।

सारणी सख्या – 1 5

चयनित रोजगार महिलाओ का विवरण

क्रम सख्या	व्यवसाय समूह	सख्या
1	पशुपालन एव मुर्गी पालन	68
2	नौकरी	56
3	सामग्री निर्माण	72
4	मजदूर	124
5	फुटकर व्यवसायी	80
योग		400
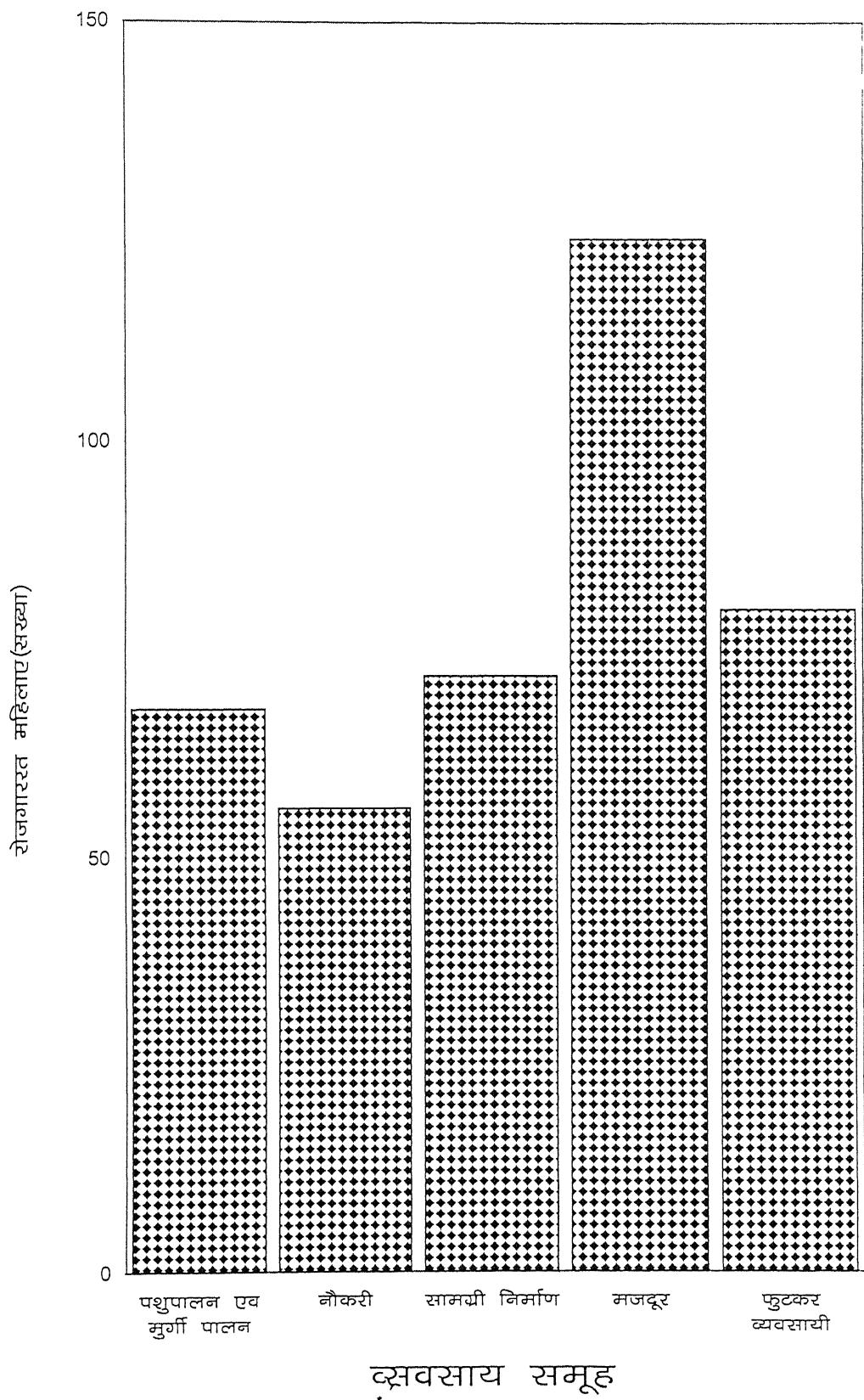
चयनित रोजगाररत महिलाएं
150
100
50
0
रोजगाररत महिलाए (सख्या)
पशुपालन एव मुर्गी पालन
नौकरी
सामग्री निर्माण
मजदूर
फुटकर व्यवसायी
व्यवसाय समूह

अनुसूची की तैयारी :

अनुसूची की तैयारी करने के लिए शोधकर्ती ने रिसर्च मैथोलाजी (शोध प्राविधि) की पुस्तको, सामाजिक-आर्थिक, अन्य ग्रन्थो एव पुस्तकों का अध्ययन कर तैयार किया है। प्रश्नावली दो प्रकार की बनायी गयी है, प्रथम अनुसूची मे रोजगार उनके व्यक्तिगत व्यवसाय से सम्बन्धित सूचनायें हैं। द्वितीय अनुसूची में द्वितीय आकडे एकत्र करने हेतु बनायी गयी है जिसमें राज्य, जनपद और नगर की सूचनाये बनायी गयी हैं।

प्रथम अनुसूची चयनित रोजगाररत महिलाओं से सम्बन्धित है इसको सरल बनाने के लिए शोधकर्ती ने अनुसूची को पॉच उपखण्डो मे विभक्त है। (सलग्न प्रश्नावली परिशिष्ट-2) प्रथम भाग में असगठित क्षेत्र में कार्य करने वाली महिलाओ का परिचय लिया गया है। द्वितीय खण्ड मे उनके जाति एव व्यवसाय, शैक्षिक स्तर को लिया गया है।

द्वितीय अनुसूची मे द्वितीय आकडे राज्य, जनपद एव नगर के विभिन्न कार्यालयो के अभिलेख और प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओ मे से सकलित किया गया है।

तृतीय खण्ड में उनके कार्य के प्रकार एव समय को लिया गया है। चौथे खण्ड में कार्य कर रहे कठिनाइयों को सम्मिलित किया गया है। पॉचवे खण्ड मे उनके अच्छे कार्य करने हेतु सरकारी कार्यक्रम के विषय में एव व्यूह नीति हेतु प्रशन बनाया गया है।

(1) व्यक्तिगत परिचय

इस खण्ड में रोजगाररत महिलाओं का नाम, पता, उम्र, जाति, धर्म और परिवार की सख्या को सम्मिलित किया गया है।

(2) कार्य .

प्रश्नावली के द्वितीय खण्ड में रोजगार के प्रकार, मजदूरी, कार्य करने का समय, कार्यस्थल की दूरी इत्यादि को सम्मिलित किया गया है।

(3) आर्थिक स्तर

प्रश्नावली के इस तृतीय खण्ड में कार्य करने वाली महिलाओ का क्या आर्थिक स्तर था। उनके चल एव अचल सम्पत्तियो का विवरण किया गया है।

(4) कठिनाईयाँ

प्रश्नावली के इस चौथे खण्ड में अनौपचारिक क्षेत्र में कार्य करने वाली महिलाओ को क्या कठिनाई हुई है एव उसका निराकरण कैसे हो इसका विवरण एकत्र किया गया है।

(5) सुझाव

प्रश्नावली के पाँचवें खण्ड में अनौपचारिक क्षेत्र मे महिलाओं का विचार लिया गया है कि किस प्रकार का कार्य करें, रोजगार कार्यक्रम से आर्थिक स्थिति मे सुधार हुआ है कि नहीं। और सरकार द्वारा चलाये गये कार्यक्रमो को किस तरीके से कार्यान्वित किया जाय एव कार्य के विषय व्यूह नीति हेतु सुझाव सम्बन्धी प्रश्न हैं।

द्वितीय प्रश्नावली मे देश की कुल जनसख्या, कार्यरत महिलाओं की जनसख्या, साक्षरता प्रतिशत आदि है। उत्तर प्रदेश राज्य की जनसख्या, साक्षरता प्रतिशत, अनौपचारिक क्षेत्र मे कार्य करने वालों की सख्या है। तथा जनपद एव नगर की परिवारों की जनसख्या, कुल जनसख्या, शिक्षा का स्वरूप, भूमि उपयोग, रोजगार मे लगे व्यक्तियों का विवरण, कार्यक्रम सृजन हेतु जानकारी आदि एकत्र किया गया है। (सलग्न परिशिष्ट सख्या-3)

तथ्यों का वर्गीकरण एवं सारणीयन विश्लेषण :

प्रश्नावली सकलन के बाद सकलित किये गये प्रथम प्रश्नावली को कार्यरत व्यवसाय के समूह के अनुसार विभक्त किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में सकलित तथ्यो का वर्गीकरण एव सारणीयन के लिए पॉच समूह का निर्माण किया गया। समस्त आकडों को वर्गीकृत एव तालिकाबद्ध करने के पश्चात प्रतिशत के आधार पर तालिकाबद्ध ढग से विश्लेषण किया गया। आकडों को भाषा तथा अन्य रूपों के माध्यम से विश्लेषित किया गया। इस प्रकार से इस शोध पत्र को वैज्ञानिक पद्धति पर विश्लेषित आधार पर निष्कर्ष

प्राप्त किया गया। इन्हीं आंकडों के आधार पर शोध को प्रदर्शित करने हेतु मानचित्र एव रेखाचित्र भी तैयार किया गया है।

अनुसूची के समस्त प्रश्नों को सारणीयन के रूप मे दिया, मास्टर शीट, तैयार की गई मास्टर शीट के आकड़ों के आधार पर समान तालिकाओं का निर्माण किया गया। इस प्रकार मास्टर शीट के आकडों को सुव्यवस्थित ढ्ग से तालिकाबद्ध करके अध्ययन हेतु व्यवस्थित किया गया।

व्यवसाय के प्रथम समूह में पशुपालन एव मुर्गीपालन है। इसके अन्तर्गत दुग्ध व्यवसाय, सुअर पालन, मुर्गी पालन, कार्य कर रही रोजगाररत महिलाओं को रखा गया है।

द्वितीय व्यवसाय समूह मे नौकरी को रखा गया है। इसमें मासिक वेतन पर कार्य करने वाली व्यक्तिगत नर्सरी स्कूलों की अध्यापिकाओं, ट्यूशन पढाने वाली महिलाओ और बर्तन साफ करने वाली महिलाए सम्मिलित हैं।

तृतीय व्यवसाय समूह में सामग्री निर्माण है। इसके अन्तर्गत बीडी वनाने वाली, अचार बनाने वाली, टोकरी वनाने वाली, मिट्टी के वर्तन वनाने वाली, कढाई-बुनाई में कार्यरत महिलाए हैं।

चतुर्थ व्यवसाय के समूह में मजदूर हैं। जिसके अन्तर्गत दैनिक वेतन पर प्रतिदिन गृह निर्माण में मजदूरी कार्य करने वाली महिलाए, और प्राइवेट दुकानो मे कार्य करने वाली महिलाए सम्मिलित हैं।

पचम व्यवसाय समूह में फुटकर व्यवसाय है। इसके अन्तर्गत पान, फल, सब्जी, ब्यूटीशियन, मछली बेचने वाली, कपडा धुलाई में कार्यरत महिलाओं को सम्मिलित किया गया है।

****

द्वितीय अध्याय

❖ जनपद इलाहाबाद में नगर की स्थिति और समाजार्थिक स्वरूप

जनपद इलाहाबाद मे नगर की स्थिति और सामाजार्थिक स्वरूप

भारत का हृदय प्रदेश के नाम से विख्यात उत्तर प्रदेश 241068 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल में फैला है। प्रदेश को 13 मण्डलो में विभाजित किया गया है। जिसमें 70 जिले हैं। भौगोलिक रूप से उत्तर भारत में स्थित है जिसकी सीमा दक्षिण मे मध्य प्रदेश, पूर्व में बिहार, पश्चिम में पजाब, हरियाणा तथा राजस्थान से लगती है। राज्य के उत्तर में उत्तराचल राज्य और अर्न्तराष्ट्रीय सीमा में नेपाल देश है। राज्य को चार भौगोलिक क्षेत्रों में सास्कृतिक-आर्थिक तथा Ecologically विभाजित किया जा सकता है ये क्षेत्र हैं -

1 पश्चिमी प्रदेश - यमुना बेसिन से निर्मित क्षेत्र
2 उत्तर प्रदेश - गगा बेसिन से निर्मित क्षेत्र
3 पूर्वी क्षेत्र - बडे पैमाने पर गगा वेसिन से निर्मित क्षेत्र
4 बुन्देलखण्ड - विध्याचल पर्वत श्रेणी से बना क्षेत्र

प्रदेश के ये उप क्षेत्र अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक स्थितियों में एक दूसरे से सर्वथा भिन्न हैं और इन दृष्टियों से इन सभी क्षेत्रों के विकास का परिदृश्य अलग-अलग है। यद्यपि मूल रूप से अन्तर बहुत बड़ा नहीं है फिर भी जो दृष्टिगत है उसमे अन्तर निश्चित रूप से दिखाई देता है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश आर्थिक रूप से सम्पन्न है जहाँ सिचाई की पूर्ण और पर्याप्त सुविधा है।

मध्य उत्तर प्रदेश में औद्योगिक विकास नजर आता है किन्तु कृषि का विकास नहीं हुआ है। पूर्वी उ0प्र0 तथा बुन्देलखण्ड प्रदेश के सबसे विपन्न तथा अविकसित क्षेत्र है। इसलिए यहाँ किसी तरह का विकास नहीं दिखाई देता।

1. पश्चिमी क्षेत्र :

पश्चिमी उत्तर प्रदेश का कृषीय विकास की दृष्टि से उत्तर प्रदेश ही नहीं भारत के सबसे सम्पन्न क्षेत्रों में है यह क्षेत्र सिचाई के साधनों से पूर्ण रूपेण सम्पन्न है नहरों के जाल तथा ट्यूबवेलों ने इस क्षेत्र में हरित क्रांति को सफल

बनाया जो इस क्षेत्र के विकास के मूल में है। आर्थिक रूप से सम्पन्न यह क्षेत्र महिलाओ के विकास की दृष्टि से अत्यन्त पिछडा हुआ है। समाज में उनकी स्थिति द्वितीय श्रेणी के नागरिक की है। शिक्षा का स्तर बहुत अच्छा नहीं है। इसलिए इस क्षेत्र में महिलाओं के विकास की दृष्टि से अत्यन्त सघन चेतना और कार्य की आवश्यकता है।

2. मध्य क्षेत्र :

परम्परागत रूप से मध्य क्षेत्र तथा पूर्वी क्षेत्र की सस्कृति में कोई बुनियादी अन्तर नहीं है। यहॉ भूमि का बंटवारा जातीय आधार पर ही है और निम्न जातीय लोगों के पास सिचित भूमि नहीं है। इस परिक्षेत्र में महिलाओं की गृह उद्योग सम्बन्धी काम की परम्परा है जैसे कसीदाकारी तथा चिकेन की कढाई जिसने अब उद्योग का रूप ले लिया है।

3. पूर्वी क्षेत्र :

उत्तर प्रदेश का पूर्वी उपक्षेत्र भौगोलिक रूप से सबसे बडा तथा पूरी तरह से सामतवादी परम्पराओं का गढ है। इस क्षेत्र में जनसख्या का भार सबसे अधिक है। पश्चिमी और मध्य क्षेत्र की अपेक्षा यहॉ के लोगों की आर्थिक स्थिति मजबूत नहीं है। इसी क्षेत्र में इलाहाबाद जनपद आता है। यहॉ पर महिलाओं के विकास की दृष्टि से उन्हें जागरूक करने की आवश्यकता है। इस क्षेत्र में महिलायें घरेलू कार्यो के अलावा अन्य कार्य आर्थिक स्तर ऊॅचा उठाने हेतु करती हैं। यहॉ पर महिलाओं का शिक्षा स्तर सामान्य है।

4. बुन्देलखण्ड क्षेत्र :

बुन्देलखण्ड का अधिकाश भाग असिचित तथा ऊसर है। सिचित क्षेत्र अत्यन्त कम तथा वर्षा बहुत कम होती है। इन्हीं कारणो से इस सम्पूर्ण क्षेत्र की अधिसख्य आबादी गरीबी रेखा के नीचे जाती है। कुछ जिलों, जैसे बादा आदि में जनजीवन

इलाहाबाद नगर की स्थिति
भारत मे उत्तर प्रदेश की स्थिति
इलाहावाद
उत्तर प्रदेश
इलाहावाद नगर
उत्तराचल
ने
पा
ल
य
मु
ना
न
दी
ग
गा
न
दी
राजस्थान
विहार
मध्य प्रदेश
इलाहाबाद जनपद
इलाहाबाद नगर

चित्र सख्या 5
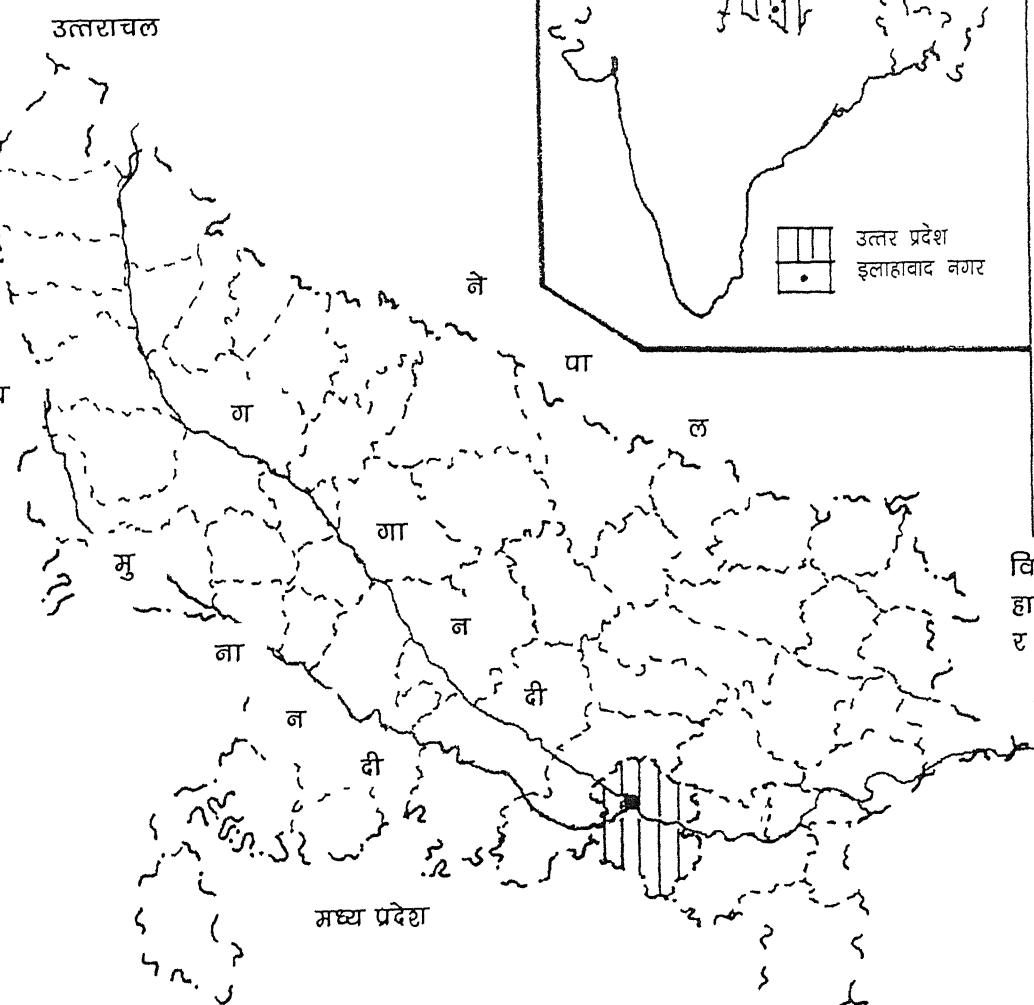
जगलों पर आश्रित है। इस पूरे परिक्षेत्र में मजदूरों को दी जाने वाली मजदूरी राज्य के अन्य क्षेत्रों के अलावा बहुत कम है। इस सम्पूर्ण क्षेत्र मे मध्यकालीन सामतवादी प्रवृत्तियॉ थोड़ा बहुत अन्तर के साथ यथावत विद्यमान है जो इस क्षेत्र के सामाजिक विकास मे बाधक है। सामान्यत यहॉ महिलाओं की स्थिति पर भी मध्य कालीन प्रभाव है, अधिकाश महिलायें सामान्यत भारतीय घरेलू महिलायें हैं।

जनपद इलाहाबाद में नगर की स्थिति और सामाजार्थिक स्वरूप :

इलाहाबाद जनपद $24^0 47$ डिग्री और $25^0 47$ डिग्री उत्तरी अक्षाश तथा $80^0 09$ डिग्री और $81^0 19$ डिग्री पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है। इलाहाबाद पूर्व से पश्चिम 63 कि0मी0 लम्बा और उत्तर से दक्षिण 109 कि0मी0 मे चौडाई में फैला है। जिले की उत्तरी सीमा पर प्रतापगढ, पूर्वोत्तर जौनपुर, पूर्व में वाराणसी, पश्चिम मे कौशाम्बी, दक्षिण पश्चिम में बादा, दक्षिण पूर्व में मिर्जापुर तथा दक्षिण मे मध्य प्रदेश राज्य का रीवा जनपद स्थित है। इलाहाबाद के भौगोलिक विस्तार एव प्राकृतिक विभिन्नताओं को देखते हुए चार अप्रैल 1997 को राज्य सरकार द्वारा जनपद का पुनर्गठन किया गया। जनसख्या के सामाजिक-आर्थिक उत्थान हेतु कुछ भाग निकाल कर नवसृजित जनपद कौशाम्बी में कर दिया गया। इस दृष्टिकोण से जनपद का क्षेत्रफल कुछ कम हो गया वर्तमान समय में जनपद का क्षेत्रफल 5437 2 वर्ग किलोमीटर है। इस दृष्टिकोण से इलाहाबाद जनपद का प्रदेश में अट्ठारहवा स्थान है।

प्राकृतिक विषमताओं के द्वारा जनपद को 2 उपखण्डों में विभक्त किया जा सकता है जिन्हें गंगापार, यमुनापार कहते हैं। प्रशासनिक व्यवस्था को सुचारू रूप से सचालित करने के लिए जनपद में आठ तहसीलों, 20 विकासखण्ड, 9 नगर पचायत, छावनी क्षेत्र-1 और 1 नगर निगम इलाहाबाद है। नगर निगम के अलावा 374 गॉव हैं जिसमें से 2,799 गॉव आबाद हैं और 275 गैर आबाद ग्राम हैं। इस प्रशासनिक ढॉचे को हम निम्न सारणी से स्पष्ट कर सकते हैं।

सारणी – 21

जनपद का प्रशासनिक स्वरूप

क्र0 स0	तहसील का नाम	विकास खण्ड का नाम	कुल आबाद ग्राम	नगर पचायत, नगर निगम, छावनी क्षेत्र
1	सोराव	1- कौडिहार	207	1- लालगोपालगज
	,,	2- होलागढ	90	,,
	,,	3- मऊआइमा	93	2- मऊआइमा
	,,	4- सोराव	106	,,
2	फूलपुर	5- बहरिया	199	,,
	,,	6- फूलपुर	148	3- फूलपुर
3	हण्डिया	7- बहादुरपुर	154	4- झूसी
	,,	8- प्रतापपुर	129	,,
	,,	9- सैदाबार	156	,,
	,,	10- धनुपुर	190	,,
	,,	11- हण्डिया	126	5- हण्डिया
4	बारा	12- जसरा	109	6- शकरगढ
5	करछना	13- शकरगढ	185	,,
	,,	14- चाका	97	,,
	,,	15- करछना	119	,,
	,,	16- कौंधियारा	83	7- सिरसा
6	मेजा	17- उरुवा	91	8- कोराव
	,,	18- मेजा	148	9- भारतगज
7	कोराव	19- कोराव	203	10-कन्टोमेन्ट बोर्ड
	,,	20- माण्डा	166	11- नगर निगम
कुल	7	20	2799	11

स्रोत समाजार्थिक समीक्षा वर्ष 2000-01 जनपद अर्थ एव सख्या प्रभाग, राज्य नियोजन सस्थान इलाहाबाद, उ0प्र0।

उपर्युक्त सारणी से प्रतीत होता है कि इलाहाबाद नगर जनपद के प्रशासनिक ढॉचे मे महत्वपूर्ण स्थान रखता है। नगर के अन्तर्गत इलाहाबाद नगर महापालिका तथा छावनी क्षेत्र भी सम्मिलित है। इलाहाबाद नगर 25^{0} अक्षाश उत्तर 81^{0}-50 डिग्री देशान्तर पूर्व में समुद्र तल से 303 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। नगर गगा, यमुना और सरस्वती के सगम तट पर स्थित है। इलाहाबाद नगर को प्रयाग भी कहते हैं जो प्राचीन काल से हिन्दुओं का महत्वपूर्ण तीर्थ रहा है। प्रयाग का उल्लेख महाकाव्य, पुराणों अन्य कृतियों में आया है। मनुस्मृति के अनुसार विशन- से प्रयाग का विस्तृत भूभाग मध्य प्रदेश में सम्मिलित था।[1] कुम्भ पुराण के अनुसार प्रयाग मण्डल पॉच प्रयोजन लगभग 410 किलोमीटर फैला हुआ था, मत्स्य पुराण के अनुसार इसके विस्तार प्रतिष्ठान में वासुकी सरोवर तथा नागों के निवास तक था।

ब्राह्मण तथा बौद्ध साहित्य के अनुसार प्रयाग का सम्बन्ध कुछ पौराणिक महान् विभूतियों से रहा है। महाभारत के अनुसार सृष्टि के देवता ब्रह्म ने यहॉ पर एक यज्ञ किया था जिससे इसका नाम प्रयाग पड़ा, 'प्रा' शब्द उत्तम एव 'याज्ञ' शब्द यज्ञ का द्योतक है, इसे भाष्कर क्षेत्र भी कहा जाता था, और सोम, वरुण एव प्रजापति का जन्म हुआ था।[2] चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपने ग्रन्थ में लिखा है कि प्रयाग में राजा हर्ष ने अपने संचित कोष को गरीबों, दरिद्रों, ब्राह्मणों, बौद्ध तथा जैन भिक्षुकों को दान रूप में अपने जेवरात, सामान जैसे- कपडे, हार, कर्णफूल, कगन और अपने मुकुटों को दान देकर एक उदाहरण स्थापित किया था।[3] नगर में अब भी इसी नाम का एक रेलवे स्टेशन प्रयाग है। गगा और यमुना के सगम के पास ही एक ऊँचा टीला है जहॉ पर भारद्वाज ऋषि का आश्रम था जिसमे राम के भाई भरत उनके आश्रम में मिलने आये थे। अपनी धार्मिक पवित्रता के कारण ये नगर अतीत काल से तीर्थराज के नाम से भी प्रसिद्ध है।

गौतम बुद्ध के समय वश राज्य का अग था। चन्द्रगुप्त मौर्य (302-297) के ई0पू0 विशाल साम्राज्य में इसका महत्वपूर्ण स्थान था। चीनी यात्री फाह्यान गुप्त साम्राज्य, चन्द्रगुप्त के समय प्रयाग में आया था तो उसने प्रयाग को एक घनी

---

[1] मनुस्मृति - गगानाथ झा द्वारा सम्पादित पृष्ठ 79

[2] द, जनरल ऑफ इलाहाबाद, हिस्टोरिकल सोसाइटी, इला0 खण्ड-I 1982

[3] आर0एस0 त्रिपाठी, इण्डियन आरकियोलाजी, 7954-55

जनसंख्या वाला नगर बताया था। राजा हर्ष के शासन में महान नगर था। राजा हर्ष प्रत्येक पाँचवें वर्ष एक महान सभा आयोजित कर निर्धन तथा धार्मिक लोगों को अपने कोष से दान देता था। अकबर के शासन में पुन इस शाही नगर की स्थापना हुई जिसका नाम इलावास अथवा इलाहाबाद रखा था। सन् 1801 मे अवध के नवाब सादअली खाँ ने इसे अग्रेजो को सौंप दिया।

अग्रेजों ने इसे प्रमुख सैनिक तथा मुख्यालय बनाया। पूर्वी सीमा पर यमुना के निकट सरकारी अधिकारियों के रहने के लिए घर बनाये गये। उन्हीं के कार्यकाल में एक नये सिविल स्टेशन की नींव डाली गयी जिसका विस्तार कर्नलगज से उत्तर की ओर होता गया और बढ्ते हुए नगर की आवश्यकता को पूरा करने के लिए नये बाजार कटरा की स्थापना की गयी। 1857 के स्वतन्त्रता सग्राम के दौरान सिविल स्टेशन तथा छावनी क्षेत्र का नवीनीकरण करके एक नयी बस्ती छावनी की स्थापना की सन् 1863 में नगर इलाहाबाद में नगर पाल की स्थापना की गयी। सन् 1960 में इलाहाबाद को नगर महापालिका बना दिया गया। वर्तमान समय में इसे नगर निगम से जाना जाता है। इलाहाबाद नगर का क्षेत्रफल 81 46 वर्ग किलोमीटर है जिसमें नगर निगम का क्षेत्रफल 63 15 वर्ग किमी0 तथा छावनी का क्षेत्रफल 18 21 वर्ग किमी0 है। उत्तर से दक्षिण इसकी लम्बाई 17 किमी0 तथा पश्चिम से इसकी चौड़ाई लगभग 16 किमी0 है। प्रशासनिक प्रयोजन के लिए और नगर के विकास के लिए नगर को 70 वार्डो में विभाजित किया गया है। जिसे मानचित्र सख्या 2 2 में दिखाया गया है। नगर में वार्ड सख्या एव मुहल्ले का नाम निम्नलिखित है।

वार्ड सख्या		वार्ड/मुहल्ले का नाम
1	–	मुडेरा
2	–	मलाकराज
3	–	गोविन्दपुर
4	–	हरवारा
5	–	राजरूपपुर
6	–	निहालपुर

7	-	दरियाबाद
8	-	कृष्णनगर
9	-	ममफोर्डगज
10	-	जहागीराबाद
11	-	टैगोर टाउन
12	-	करैलाबाग
13	-	रेलवे क्षेत्र
14	-	बाघम्बरी गद्दी
15	-	सुलेम सराय
16	-	सिविल लाइन्स क्षेत्र प्रथम
17	-	सिविल लाइन्स क्षेत्र द्वितीय
18	-	राजापुर
19	-	मीरापुर
20	-	कटघर
21	-	एलनगंज
22	-	फाफामऊ
23	-	पूरा पडाइन
24	-	दरियाबाद भाग-2
25	-	नैनी
26	-	पूरा मनोहरदास
27	-	म्योराबाद
28	-	सलोरी
29	-	मधवापुर
30	-	उमरपुर नीवा
31	-	करैली
32	-	चक भटाही
33	-	चकदोंदी
34	-	तेलियरगज
35	-	चक रघुनाथ
36	-	शहराराबाग
37	-	मोहत्सिमगज
38	-	दरभगा
39	-	रामबाग

40 – मुट्ठीगज

41 – आजाद

42 – मालवीय नगर

43 – दारागज

44 – खुल्दाबाद

45 – बख्तियारी

46 – नई बस्ती

47 – अलोपीबाग

48 – तुलसीपुर

49 – वेनीगज

50 – सरायगढी

51 – वहादुरगज

52 – पूरा ढाकू

53 – सुल्तानपुर

54 – लूकरगज

55 – अतरसुइया

56 – बादशाही मडी

57 – चौखण्डी

58 – खलासी

59 – रानी मण्डी

60 – न्यू कटरा

61 – कटरा

62 – भारद्वाजपुरम

63 – हिम्मतगज

64 – शाहगज

65 – पूरा दलेल

66 – अटाला

67 – दाराशाह अजमल

68 – दोंदीपुर

69 – बक्शी बाजार

70 – मीरगज[1]

---

[1] पुनर्गठित जनपद की जनसख्या (इसमें सृजित जनपद कौशाम्बी से नये भूभाग की जनसख्या सम्मिलित नहीं है)

समाजार्थिक दशाओ के अध्ययन में जनसख्या का अध्ययन करना जरूरी होता है क्योकि जनसख्या सामाजिक-आर्थिक विकास मे प्रभावित करती है। इलाहाबाद की जनसख्या सन् 1991 की जनगणना के आधार पर 3890613 थी जिसमें नगरीय जनसख्या 954607 थी और ग्रामीण 2936006 थी, जो कि कुल जनसख्या का 24 56 प्रतिशत जनसख्या नगर मे तथा गॉव मे 75 44 प्रतिशत निवास करती थी। जनपद में नगर के विभिन्न वर्षो की जनसख्या को सारणी एव मानचित्र सख्या 2 2 मे दिखाया गया है।

सारणी सख्या – 2 2

इलाहाबाद की जनसख्या

वर्ष	नगरीय	ग्रामीण	कुल जनसख्या
1961	443964	1994412	2438376
	(18 21)	(81 79)	(100 00)
1971	542103	2395175	2937278
	(18 46)	(81 54)	(100 00)
1981	773588	3023445	3797033
	(20 37)	(79 63)	(100 00)
1991	954607	2936006	3890613
	(24 54)	(75 46)	(100 00)
2001	1213828	3727682	4941510
	(24 56)	(75 44)	(100 00)

(कोष्ठक में प्रतिशत अकित है)

स्रोत 1 समाजार्थिक समीक्षा वर्ष 2000-2001 अर्थ एव सख्या प्रभाग, राज्य नियोजन सस्थान, इलाहाबाद उत्तर प्रदेश

2 कार्यालय जनगणना निदेशालय, (गृह मत्रालय भारत सरकार) लखनऊ, उ0प्र0-2001

सारणी संख्या 2 2 से प्रतीत होता है कि कुल जनसंख्या का नगरीय प्रतिशत जो कि हर दशक में वृद्धि होती रही है। सन् 1961 में जनसंख्या का 81 79

इलाहाबाद की जनसंख्या
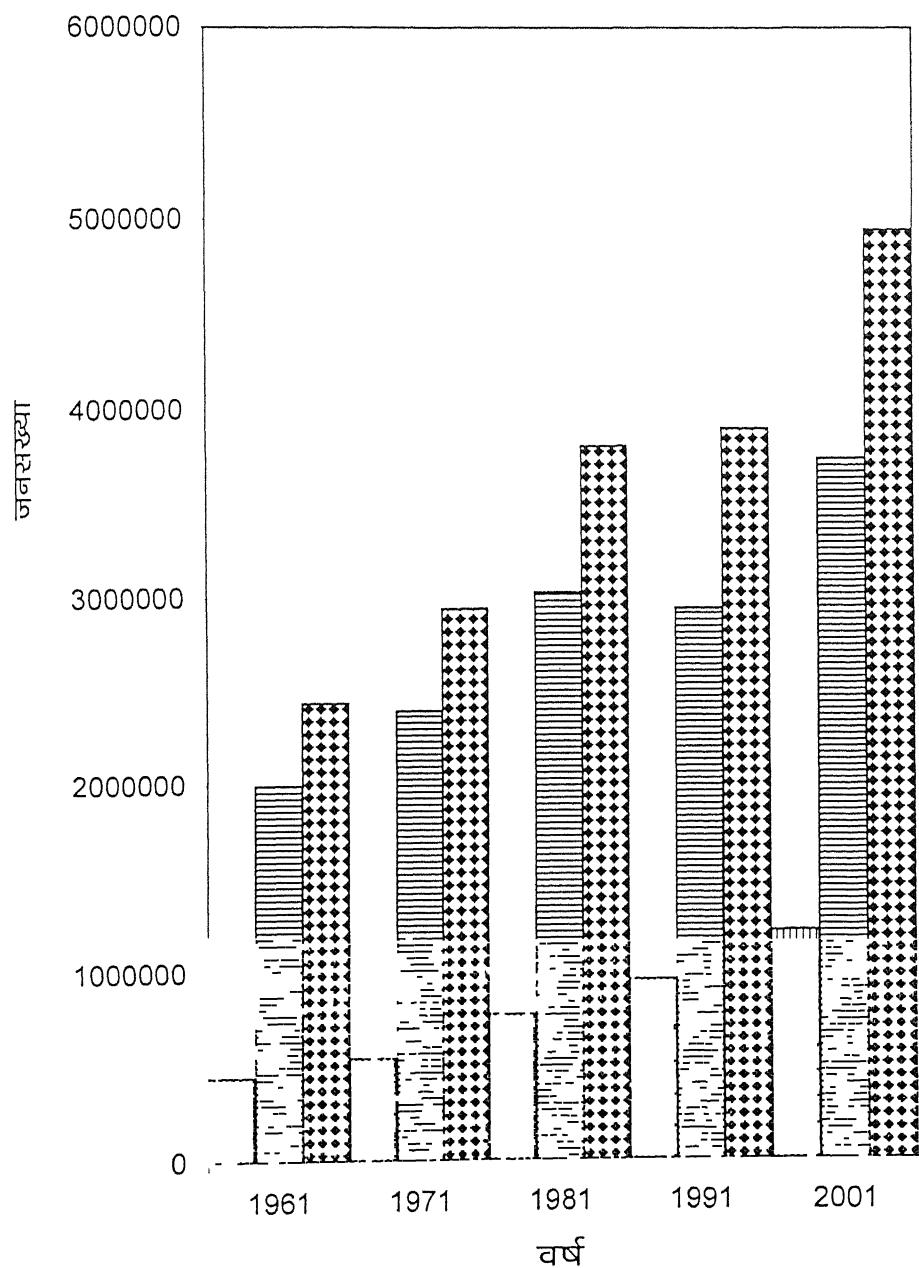
प्रतिशत गॉव में थी तो नगर में 18 21 प्रतिशत थी। सन् 1971 में ग्रामीण क्षेत्र मे 81 54 प्रतिशत और नगरीय क्षेत्र में 18 46 प्रतिशत थी। 1981 में 79 63 ग्रामीण और 20 37 प्रतिशत नगरीय हो गयी तथा 2001 में ग्रामीण क्षेत्र 75 44 और नगरीय क्षेत्र 24 56 प्रतिशत लोग रह रहे थे। इससे स्पष्ट होता है कि लोग अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के लिए रोजगार हेतु गावों को छोडकर नगर मे आकर बसे हैं।

सारणी सख्या – 2 3

लिग के अनुसार इलाहाबाद की जनसख्या

क्र0 स0	वर्ष	नगर			जनपद		
		कुल	पुरुष	महिला	कुल	पुरुष	महिला
1	1971	542103	302891	239212	2937278	1547282	1389996
		(100 00)	(55 87)	(44 13)	(100 00)	(52 68)	(47 32)
2	1981	773588	424675	348913	3797033	2008771	1788262
		(100 00)	(54 90)	(45 10)	(100 00)	(52 90)	(47 10)
3	1991	954607	525277	429330	3890613	2077490	1813123
		(100 00)	(55 03)	(44 97)	(100 00)	(53 40)	(46 60)
4	2001	1213828	669572	544256	4941510	2625872	2315638
		(100 00)	(55 16)	(44 84)	(100 00)	(53 14)	(46 86)

(कोष्ठक में प्रतिशत दर्शाया गया है)

स्रोत (i) CENSUS OF INDIA 1971, 1981, 1991,

(ii) जिला साख्यिकीय पत्रिका 2001

(iii) कार्यालय जनगणना निदेशालय (गृह मत्रालय भारत सरकार) उ0प्र0, लखनऊ-2001

सारणी सख्या 2 3 से प्रतीत होता है कि लिग के अनुसार जनसख्या मे विभिन्नता है। वर्ष 1971 में पुरुष की जनसंख्या 55 87 थी तो महिलाओं की 44 13 प्रतिशत जो कि पुरुषों की अपेक्षा कम थी। यही स्थिति सन् 1981 में देखने को मिली है जिसमें पुरुष 54 90 प्रतिशत महिला 45 10 प्रतिशत थी। वर्ष 1991 में पुरुष 55 03 प्रतिशत महिलायें 44 97 प्रतिशत थीं और वर्ष 2001 में पुरुष

कुल
पुरुष
महिला

1400000
1200000
1000000
800000
600000
400000
200000
0

जनसंख्या

1971
1981
1991
2001

वर्ष
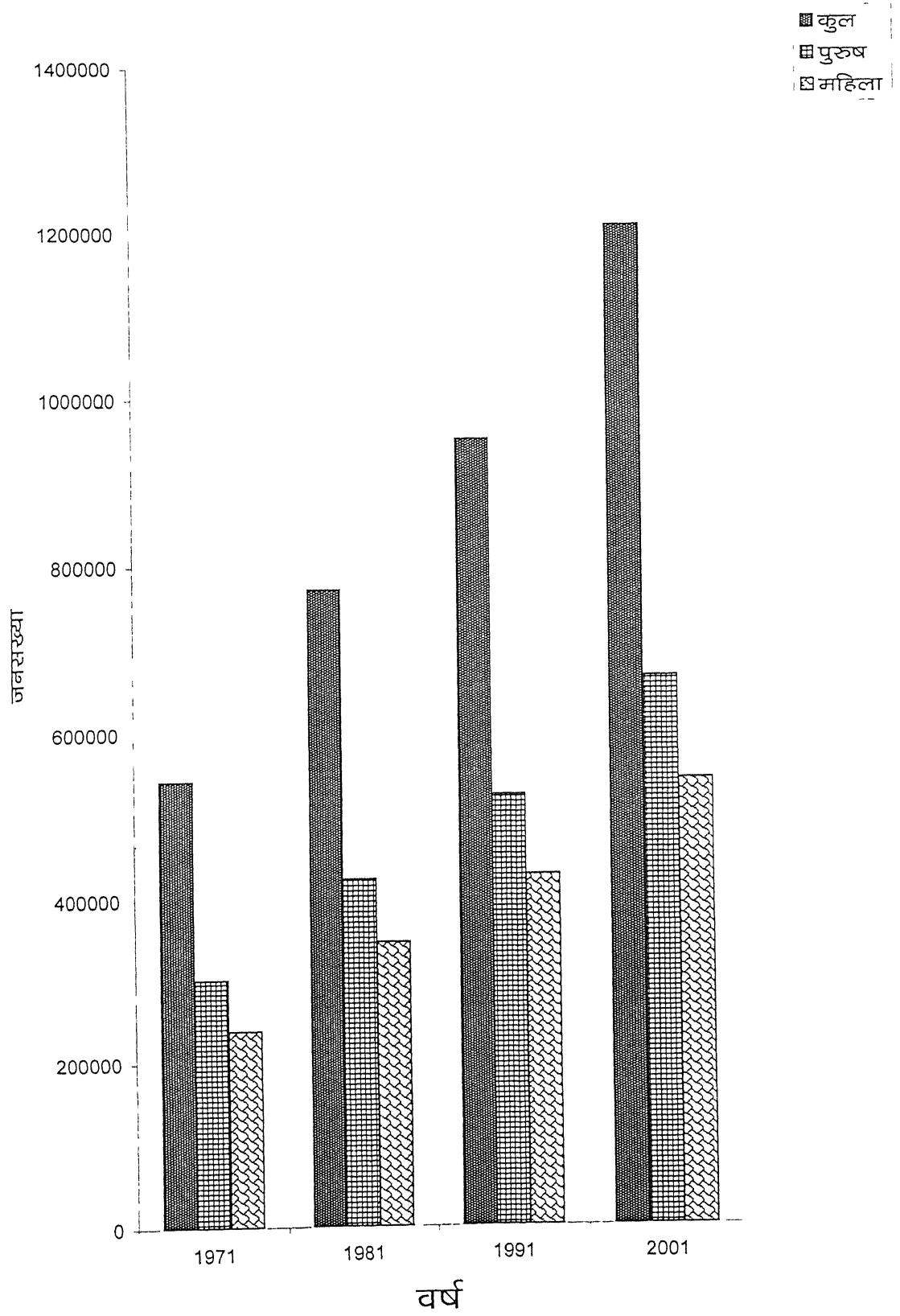
55 16 प्रतिशत हो गये और महिलायें 44 84 प्रतिशत हैं। वर्ष 1981 की तुलना मे वर्ष 1991 में महिलाओं की सख्या पुरुषों की अपेक्षा कम हुई है और वर्ष 2001 में और भी कम हो गयी है।

जनपद एव नगर की जनसख्या में लिग अनुपात का अन्तर देखने को मिलता है। यहाॅ पर पुरुषो की सख्या की अपेक्षा महिलाओ की सख्या कम है। 1000 पुरुषो पर कितनी महिलाओं की संख्या है उसे सारणी संख्या 2 4 में दर्शाया गया है।

सारणी सख्या · 2 4

प्रति हजार पुरुषो पर महिलाओ की सख्या

वर्ष	नगर	इलाहाबाद
1971	790	898
1981	822	890
1991	817	874
2001	813	882

स्रोत (i) साख्यिकीय पत्रिका इलाहाबाद - 2000

(ii) सेन्सस आफ इण्डिया निदेशक, कार्यालय गृह मत्रालय, भारत सरकार, लखनऊ

सारणी सख्या 2 4 से स्पष्ट होता है कि जनपद इलाहाबाद एव नगर में विगत दशकों से महिलाओं की पुरुषों के अनुपात में कमी थी क्योंकि सन् 1971 मे जनपद में प्रति 1000 पुरुषों में 898, नगर में 790 महिलायें थी वर्ष 1981 में जनपद में 890 और नगर में 822 महिलायें थीं। सन् 1991 में 874 जनपद मे और नगर में 817 थी वर्ष 2001 में जनपद में 882 महिलायें थीं तो नगर मे 813 महिलायें जनपद की तुलना में नगर में महिलाओ की कमी थी। नगर में 18 7 प्रतिशत महिलायें और जनपद में 11 8 प्रतिशत महिलायें पुरुषों की अपेक्षा कम हैं।

नगर की जनसंख्या वृद्वि दर :

पुर्नगठित जनपद इलाहाबाद हो जाने के कारण विगत दशकों की जनगणना की सूचना आगठित नहीं की जा सकती है। जनपद के निकले भूभाग को दृष्टिगत रखते हुए पूर्व जनपद की इलाहाबाद की वृद्धि दर इलाहाबाद का मानक होगी। जिसे निम्न तालिका सख्या 2 5 से स्पष्ट किया जा सकता है।

सारणी सख्या – 2 5

नगर की जनसख्या वृद्धि दर

(प्रतिशत में)

वर्ष	नगर			जनपद		
	पुरुष	महिला	कुल	पुरुष	महिला	कुल
1971	00	00	00	00	00	00
1981	40 21	45 86	42 70	29 82	28 65	29 27
1991	23 69	23 05	23 40	3 42	6 98	2 46
2001	27 47	26 77	27 15	26 40	27 72	27 01

स्रोत (1) साख्यिकी पत्रिका इलाहाबाद वर्ष 2001

(11) कार्यालय जनगणना निदेशालय (गृह मत्रालय भारत सरकार) उ0प्र0 लखनऊ–2001

सारिणी सख्या 2 5 से प्रतीत होता है कि वर्ष 1971 से वर्ष 1981 के बीच जनसख्या वृद्धि दर जनपद में 29 27 प्रतिशत है जिसमें पुरुषों की वृद्धि दर 29 82 प्रतिशत है तो महिलाओं की 26 65 प्रतिशत वृद्धि दर है जो पुरुषों की अपेक्षा कम है। नगर की वृद्धि दर इसकी अपेक्षा अधिक है जो कि नगर में कुल 42 70 वृद्धि हुयी है जिसमें पुरुषों की 40 21 और महिलाओं की 45 86 प्रतिशत है इससे स्पष्ट है कि महिलाओं की वृद्धि दर पुरुषों की तुलना में अधिक है। 1981 से 1991 के दशक में जनपद की जनसंख्या मे वृद्धि हुयी है किन्तु कम है क्योंकि 1991 की जनसख्या का कुछ भाग पुर्नगठित जिले में चला गया है। फिर भी जनपद में कुल

2 46 प्रतिशत की वृद्धि हुयी है। जिसमें पुरुष 3 42 प्रतिशत और महिला की 6 48 प्रतिशत हुयी है। इसमें महिलाओं की प्रतिशत वृद्धि दर अधिक है। इलाहाबाद नगर की वृद्धि प्रतिशत अधिक है जिसमें पुरुषो की 23 69 और महिलाओं की 23 05 प्रतिशत है। 1991 से 2001 के दशक में नगर की जनसख्या मे वृद्धि दर 27 15 प्रतिशत थी तो इसी समय इलाहाबाद जनपद की वृद्धि दर 27 01 प्रतिशत है। नगर मे पुरुषों की 27 47 प्रतिशत और महिलाओ की 26 77 प्रतिशत है और जनपद मे पुरुष 26 40 प्रतिशत तथा महिलाओं की 27 72 है। इस प्रकार जनपद इलाहाबाद मे जनसख्या की वृद्धि दर नगर की जनसंख्या वृद्धि दर की तुलना में कम है।

जनसंख्या में घनत्व :

सन् 1961 में जनसख्या के अनुसार जनपद मे जनसख्या का घनत्व 156 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 थी तो नगर की जनसख्या का घनत्व 5450 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर थी। वर्ष 1971 में 523 था तो वर्ष 1991 में बढकर 716 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 हो गया है। नगर की जनसख्या का 1971 मे 6655 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 था तो 1991 में बढकर 11719 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 हो गयी। सन् 1900-2001 में जनपद का घनत्व 909 प्रति व्यक्ति वर्ग किमी0 थी तो नगर की 14900 व्यक्ति वर्ग किमी0 है। जिसे सारणी सख्या 2 6 से स्पष्ट किया जा सकता है।

सारणी सख्या – 2 6

नगर की जनसख्या का घनत्व

वर्ष	नगर	इलाहाबाद (प्रति वर्ग किमी0)
1961	5450	156
1971	6655	523
1981	9497	–
1991	11719	716
2001	14900	909

स्रोत (i) साख्यिकीय पत्रिका एव जनपद का गजेटियर 1981, 1993

(ii) कार्यालय जनगणना निदेशालय, लखनऊ

उक्त तालिका से प्रतीत होता है कि जनसख्या का घनत्व जनपद की अपेक्षा नगर का घनत्व प्रति वर्ग किमी0 अधिक है।

शिक्षा :

शिक्षा-मानव जीवन को पूर्ण रूप से परिष्कृत कर उसे सर्वगुण सम्पन्न बनाने और उसे गौरवपूर्ण उच्चतम स्थान दिलाने में शिक्षा सहायक होती है। सामाजिक-आर्थिक विकास मे शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। शिक्षित व्यक्ति ही समाज को एक नयी दिशा दे सकता है, और दक्षतापूर्वक कार्य कर सकता है। इसलिए नगर की साक्षरता का अध्ययन करना आवश्यक है जिसे निम्न सारणी सख्या - 2 7 मे दिखाया गया है।

सारणी सख्या - 2 7

नगर की साक्षरता

(प्रतिशत मे)

वर्ष	नगर			जनपद		
	पुरुष	महिला	कुल	पुरुष	महिला	कुल
1971	51 7	40 2	60 8	35 6	10 8	23 9
1981	64 76	43 66	55 24	41 5	12 8	28 8
1991	70 9	61 4	68 5	59 1	23 5	42 7
2001	519227 (77 55)	357348 (65 66)	876575 (72 22)	-	-	-

स्रोत (1) साख्यिकी पत्रिका इलाहाबाद विभिन्न वर्ष

(11) जनगणना निदेशालय, लखनऊ (उ0प्र0)

सारणी संख्या 2 7 से प्रतीत होता है कि जनपद इलाहाबाद की साक्षरता प्रतिशत इलाहाबाद नगर से कम है। सन् 1971 में जनपद की साक्षरता प्रतिशत 23 9 थी तो नगर की 60 8 प्रतिशत थी अर्थात् जनपद की अपेक्षा नगर की साक्षरता प्रतिशत अधिक है। जिसमें पुरुषों की साक्षरता प्रतिशत 51 7 है तो महिलाओं की उससे कम 40 2 प्रतिशत है।

वर्ष 1981 में जनपद में 28 8 प्रतिशत साक्षर थे तो नगर में 55 24 प्रतिशत थी इसमें पुरुष 64 76 और महिलायें 43 66 प्रतिशत साक्षर थीं। वर्ष 1991 में जनपद में 42 7 प्रतिशत है तो नगर में ये साक्षरता प्रतिशत 68 5

इलाहाबाद नगर की साक्षरता
कुल
पुरुष
महिला
सराक्षरता
1400000
1200000
1000000
800000
600000
400000
200000
0
1971
1981
1991
2001
वर्ष
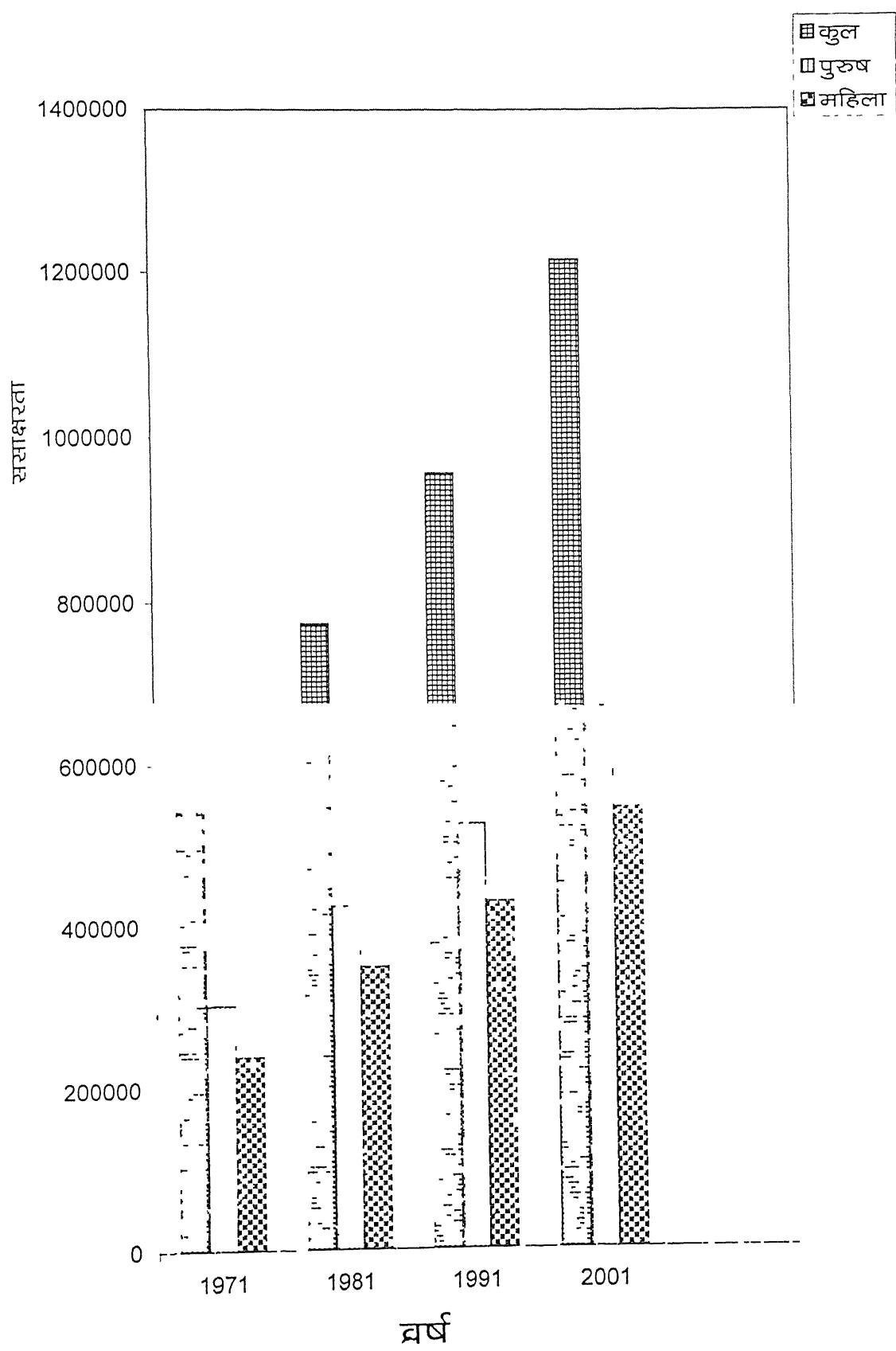
प्रतिशत है जिसमें 70 9 पुरुष हैं तो 61 4 प्रतिशत महिलायें साक्षर हैं। वर्ष 2001 में नगर की कुल साक्षरता 72 22 है जिसमें पुरुष 77 55 और महिला 65 66 प्रतिशत साक्षर हैं।

राज्य सरकार द्वारा साक्षरता उन्नयन हेतु कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। इन कार्यक्रमो मे प्राथमिक से उच्चतर माध्यमिक स्तर तक विद्यार्थी को नि शुल्क शिक्षा की व्यवस्था की गयी है। महिलाओं को जूनियर बेसिक विद्यालयों से उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययन करने वाली कन्याओं को विशेष अनुदान की सुविधा दी जा रही है। समाज में कमजोर वर्ग के छात्रों को नि शुल्क किताबे, दोपहर का भोजन, छात्रवृत्ति और असेवित क्षेत्रों में नये स्कूल खोलने की व्यवस्था आदि है।

नगर में प्रावैधिक शिक्षा सस्थान Institute of Engineering & rural technology, मोती लाल नेहरू इंजीनियरिंग कालेज, I T I, काष्ठ कला प्रशिक्षण केन्द्र हैं। नगर में प्राइमरी, मिडिल स्कूल, हायर सेकेण्ड्री स्कूल, इण्टरमीडिएट कालेज, स्नातकोत्तर, स्नातक, चिकित्सा महाविद्यालय एव विश्वविद्यालय हैं।

अशिक्षित लोगों को शिक्षित करने के लिए सरकार ने सन् 1979-80 के अनौपचारिक शिक्षा योजना, भारत सरकार की मदद से अनौपचारिक शिक्षा की पूरक कार्यक्रम चलाया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत ऐसे छात्र-छात्राओं को पढाने की व्यवस्था है जो सामाजिक-आर्थिक तथा अन्य कारणों से स्कूल में पढ नहीं पाते हैं या किसी कारण शिक्षा मध्य में ही छोड़ दिया है उन्हें शिक्षित करने के लिए इस कार्यक्रम द्वारा प्रयास किया जा रहा है। अनौपचारिक शिक्षा द्वारा नगर में स्थापित इकाई द्वारा ये कार्यक्रम प्रभावी ढग से आरम्भ किया गया है। तथा बच्चों को साक्षर बनाया जा रहा है।

इलाहाबाद में विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अल्प सख्यक, पिछड़ी जाति एवं अन्य निर्धन छात्रों को सरकार द्वारा छात्रवृत्ति प्रदान कर प्रोत्साहित किया जा रहा है। सन् 1999-2000 में रूपये 1049 35 लाख छात्रों को बांटी या वितरित की गयी सरकार द्वारा इस कार्यक्रम पर विशेष जोर दिया जा रहा है भौतिक सत्यापन भी कराया जा रहा है।

चिकित्सा सुविधाए वर्ष 1999-2000
600
500
400
संख्या
300
200
100
0
ऐलोपैथिक चिकित्सालय एव औषधालय
प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र
आयुर्वेदिक चिकित्सालय औषधालय
यूनानी चिकित्सालय औषधालय
होम्योपैथिक चिकित्सालय
मातृ शिशु कल्याण केन्द्र
केन्द्र एव उपकेन्द्र
चिकित्सा पद्धति
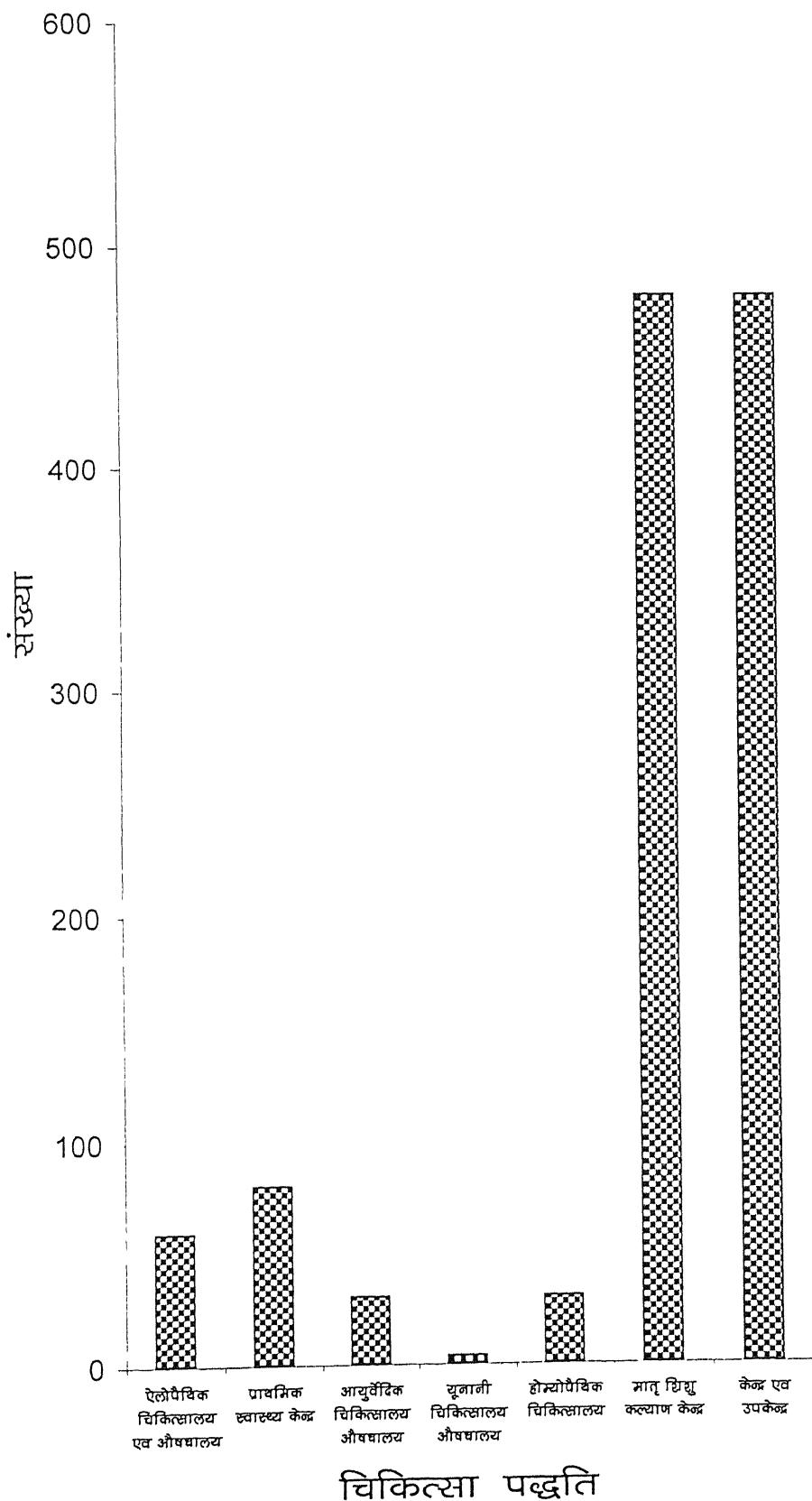
चिकित्सा एवं जन स्वास्थ्य :

किसी भी क्षेत्र का विकास मानव शक्ति पर आधारित है। चिकित्सा मानव शक्ति की पूर्ण क्षमता के उपयोग के लिये जरूरी है। मानव ससाधन के विकास में स्वास्थ्य की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सन् 1982 में घोषित राष्ट्रीय नीति में वर्ष 2000 तक सभी लोगों के लिए स्वास्थ्य की परिकल्पना की गयी थी। सरकार द्वारा प्रयास किये जा रहे थे कि मनुष्यों को ये लाभ मिल जाये। नगर में सरकार द्वारा नये एलोपैथिक चिकित्सालयों एव औषधालयों की स्थापना के साथ ही पुराने एव परम्परागत चिकित्सा पद्धति के विकास हेतु नये आयुर्वेदिक, युनानी अस्पतालों एव चिकित्सालय तथा होम्योपैथिक औषधालयों की स्थापना हुई है। इन चिकित्सा सुविधाओं को निम्न सारणी संख्या 28 से दर्शाया गया है -

सारणी सख्या - 28

चिकित्सा सुविधाये 1999-2000

क्र0स0	मद	इलाहाबाद नगर
1	ऐलोपैथिक चिकित्सालय एवं औषधालय	60
2	प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र	81
3	आयुर्वेदिक चिकित्सालय औषधालय	31
4	यूनानी चिकित्सालय औषधालय	04
5	होम्योपैथिक चिकित्सालय	31
6	मातृ शिशु कल्याण केन्द्र	480
7	केन्द्र एव उपकेन्द्र	480

स्रोत साख्यिकी पत्रिका जनपद इला0 वर्ष 2001।

चिकित्सा सुविधाओं में जनसख्या का भार पडता है। जनसख्या भार जितना ही कम होगा जनस्वास्थ्य उतना ही सुदृढ होगा। इलाहाबाद में वर्ष 1999-2000 चिकित्सा सुविधाओं पर जनसख्या भार को सारणी सख्या 29 में प्रस्तुत किया है -

चिकित्सा सुविधाओ पर जनसंख्या भार
जनसंख्या भार
150000
125000
100000
75000
50000
25000
0
ऐलोपैथिक चिकित्सालय/औषधालय
प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र
आयुर्वेदिक चिकित्सालय/औषधालय
यूनानी चिकित्सालय/औषधालय
होम्योपैथिक चिकित्सालय/औषधालय
ऐलोपैथिक चिकित्सालय/औषध लय/
प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र
चिकित्सा पद्धति